नवेम्बर - २००६

दादावाणी

आत्मविज्ञानी 'ए.एम.पटेल' के भीतर प्रकट हुए

'दादा भगवान के असीम जय जयकार हो'

कीमत - रु. १०

तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्षः २, अंक : १
अखंड क्रमांक : १३
नवम्बर २००६

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: अडालज,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)२३९७४१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (०७९)
२७५४०४०८, २७५४३९७९
मुंबई : (०२२) २४१३७६१६
वडोदरा : (०२६५) २६४४४६५
सुरत : (०२६१) २५४४९६४
राजकोट : (०२८१) २४६८८३०
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 020-8204-0746
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org
www.ultimatespirituality.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता फी)

१५ साल का

भारत :	८०० रूपया
यु.एस.ए. :	१०० डॉलर
यु.के. :	७५ पाउन्ड

वार्षिक

भारत :	१०० रूपया
यु.एस.ए. :	10 डॉलर
यु.के. :	7 पाउन्ड

भारत में D.D. / M.O. 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से भेजे।

दादावाणी

अक्रम ज्ञान से निर्भयता अपार ...

संपादकीय

अक्रम ज्ञान ज्ञानी पुरुष के पास से प्राप्त होता है, पर वह कर्मों को खपाये बगैर कृपा से प्राप्त होता है। इसलिये क्या प्राप्त हुआ है यह समझने हेतु ज्ञानी पुरुष का परिचय नितांत आवश्यक है। खुद की रॉग बिलीफे छूट गई और 'मैं शुद्धात्मा हूँ' की राईट बिलीफ बैठ गई। अब शुद्धात्मा पद यही निर्भय पद है। अब ज्ञान प्राप्ति के बाद महात्माओं को खुद निर्भय कैसे हुए हैं, भय कहाँ खड़ा होता है, किस मैं खड़ा होता हैं, भयभीत करानेवाला कौन है, खुद भय से कैसे जुदा रहना, पाँच आज्ञा रूप ज्ञान को कैसे सुयोजित करना कि जिससे खुद के निर्भय पद की हानि नहीं हो, यह जानना बहुत आवश्यक है।

चंदूभाई (चंदूभाई की जगह पाठक अपना नाम समझे) में भय उत्पन्न होने पर ज्ञान के आधार पर 'खुद' को छूने नहीं दें। आत्मा को भय क्या ? आत्मा कोई चुरा ले जाने की वस्तु नहीं है, उस पर कोई गोली नहीं चला सकता, उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता, फिर खुद को भय कहाँ रहा? लूट जाने का भय तो इस चंदूभाई को है, जेब जिसकी है उसको, आप उसके मालिक हैं। ज्ञानदृष्टि से समझ फिट होने पर खुद को कोई भय छू पाये ऐसा नहीं है। 'मैं चंदूभाई हूँ', वहाँ तक भयग्रस्त हैं और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', तो निर्भय हैं। चंदूभाई को भय आता है, वह 'व्यवस्थित' है, न्यायपूर्ण है।

भीतर भय महसूस हो और ज्ञानदृष्टि नहीं रह पाती तो दादाजी सिर पर हैं, मुझे कुछ नहीं होनेवाला, ऐसा मानकर रहिये। हमें हिलना नहीं है, तो कोई शक्ति हिला नहीं सकती। हिलनेवाले को हिलने देना, खुद मत हिलना। असर होता है वह रिलेटिव को होता है और खुद रियल उससे अलग है। फिर खुद को असर होना ही नहीं चाहिए।

किसी समय नई तरह की आवाज होने पर भय लगता है, पर वह भय नहीं है, भड़क है। वह शरीर में भरा हुआ माल है, संगी चेतना को भड़क रहेगी। शुद्धात्मा को कोई भय नहीं होता। 'हमें' भड़क को जानना है।

पुलिस ले जाने आयी, तब भी चंदूभाई को ले जायेंगी। शुद्धात्मा को कोई पहचानता ही नहीं, कैसे पकड़ेंगी? फाँसी पर लटका वे तब भी आत्मा को कोई फाँसी नहीं है। यह सारी पुद्गल की करामत है। फाँसी भी पुद्गल है, फाँसी चढ़नेवाला भी पुद्गल है और फाँसी पर चढ़ानेवाला भी पुद्गल है। आत्मा कभी फाँसी चढ़ा नहीं है, जो हम 'खुद' हैं। ऐसे हर तरह से संसार चंदूभाई को छूता है, खुद चंदूभाई से अलग, असंग-निर्लेप ऐसा शुद्धात्मा अलग है। जब ऐसी समझ रहती है फिर भय परिणाम होते ही नहीं।

इस प्रकार अक्रम ज्ञान में परम पूज्य दादा भगवान ऐसी अनेकों प्रकार की ज्ञान चाबियाँ समझा देते हैं, जो प्रस्तुत अंक में संकलित हुई है। जुदापन की जागृति के साथ इन चाबियों को लागू करने पर संसार में निर्भय दशा बरतेगी।

दीपक देसाई .... ▯

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रुपांतर है। कोष्ठक में दिये गये शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किये गये वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पायें तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिये हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

अक्रम ज्ञान से निर्भयता अपार...

ज्ञानी के संग से सर्व भयों से मुक्ति

प्रश्नकर्ता : दादाजी, भय की गाँठ (ग्रँथि) किस प्रकार पिघलेगी?

दादाश्री : अपना यह ज्ञान मिलने के बाद सारे भय कम हो जाते है।

प्रश्नकर्ता : काल्पनिक तौर पर किसी को यदि भय रहता हो तब?

दादाश्री : नहीं, बहुतेरे भय, मतलब जो बड़े हाऊ लगते थे, वे सारे भय भाग जायें।

प्रश्नकर्ता : मगर ऐसे बिलकुल निर्भय कब होते हैं?

दादाश्री : निर्भय तो, ज्ञानी पुरूष के साथ रहना पड़े। दो महीने-चार महीने साथ रहना पड़े। साथ-साथ रहने पर वह भय सारा उड़ जाये। भय, वह कोई वस्तु नहीं है, समझ के फर्क के कारण है। मगर ज्ञानी के पास रहने पर समझ में आ जाये कि अब यह मेरी समझ में फर्क पड़ गया है जबकि अकेले रहने पर समझ के फर्क से वहाँ उलझता ही जायें।

प्रश्नकर्ता : जो माल भरा हुआ है, वह भरा हुआ माल निकलता....

दादाश्री : यह नया माल नहीं है, (पिछला) भरा हुआ माल है। इसलिये वह सारा निकल जायेगा। हमारे यहाँ मार्ग ही ऐसा है न कि सब निकलता ही जाये। एक के बाद एक निकलता रहे। निकलता ही रहे सब!

संपूर्ण निर्भय पद दिया है सारा। मार्ग ही ऐसा सुंदर और स्वतंत्र है, इन्डिपेन्डेन्ट मार्ग। पहले तो कितने सारे भय निकालने हेतु तो 'व्यवस्थित' (सायन्टिफिक सरकमस्टेन्शियल एविडन्स) दे दिया। कितने सारे भय दूर कर दिये! भय रखने का कोई कारण नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कितने सारे भय निकालने हेतु 'व्यवस्थित' दिया, लेकिन सारे के सारे भय निकालने के लिये 'व्यवस्थित' है न?

दादाश्री : हाँ। जितना 'व्यवस्थित' समझ में आता जाता है, उतने दूसरे भय निकलते जाते है और 'व्यवस्थित' संपूर्ण समझ में आये तो केवलज्ञान हो जाये।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी। मतलब 'व्यवस्थित' संपूर्ण समझ में आ जाने पर सारे प्रकार के भय जाते रहें न?

दादाश्री : जाने ही चाहिये। 'व्यवस्थित' को जैसा है वैसा जानने पर सारे भय जाते रहै। अब तक तो थोडा सा जाना हमने, अब साथ बैठने पर जानते रहेंगे। कभी पंद्रह दिन साथ रहने का हुआ तो बहुत सा जानने में आ जाये। तैयारी रखने पर पंद्रह दिन साथ रहने का अवसर आने पर फिर साथ बैठना, साथ में भोजन लेना, साथ में पीना, साथ में सो जाना, आपस में बातें होती रहे, एक ही मकान में हो।

बिना भय के होते है ज्ञानी

जब अंतिम भय जायेगा तब बात बनेगी। लोगों का भय जाता नहीं। कहीं भी भय जाता नहीं है। निरंतर छटपटाहट, भय रहा ही करे।

रास्ते पर से जाना हुआ, कोई कहेगा कि आगे डकैत मिले ऐसा है। अब वहाँ गये बगैर चलनेवाला नहीं होने पर भीतर क्या होगा फिर? ज्ञान सुना मतलब छटपटाहट। हमारे जगत् में छटपटाहट आई कहाँ से? यह संसार हमारा, हम उसके मालिक और छटपटाहट क्यों हुई? क्योंकि उसको पराये जगत् पर कब्जा जमाये रखना है, वर्ना जरा-सी भी छटपटाहट होती होगी? चोर-डकैत सब आयें-जायें, वह तो उनका धंधा है, उसमें छटपटाना कैसा? धंधा नहीं है उनका? व्यापार है उनका, यदि हम अच्छे ग्राहक रहे तो हमें माल देंगे वर्ना माल नहीं भी देते। कहेंगे कि इनको माल क्यों दें? व्यर्थ जायेगा।

किसी भी प्रकार का भय नहीं रहना चाहिए। जहाँ तक भय है वहाँ तक कुछ पाया नहीं है। अब आपको तो ज्ञान मिलने के बाद भय उत्पन्न होने पर आप उसे ज्ञान के आधार पर पलट देंगे, ताकि भय निकल जायेगा। आत्मा को भय कैसा? आत्मा वह कोई चुरा ले जाने की वस्तु नहीं है। उस पर कोई गोली नहीं चला सकता। उसे कोई कुछ नहीं कर सकता। उसे भय कहाँ रहा? तब कहे, 'लूट जाने का डर।' मगर वह तो इस चन्दूभाई को है। जेब जिसकी है उसे, आप उसके मालिक हुए हैं अब। और यदि चिंता-उपाधि करेंगे तो क्या वह नहीं लूटेगा? तेरे चेहरे पर उपाधि देखकर नहीं लूटता होगा तो भी लूटेगा। मार-मार के हड्डी-पसली एक कर देगा!

चार जीते उसने जीता जगत

जो चार लुटेरों से नहीं डिगता हो, मगर पंद्रह-बीस का झुंड शोर मचाते आने पर यदि काँपने लगा तो फिर हो गया न, काम तमाम हो गया न? जो चार से नहीं डिगा वह चालीस से नहीं डिगता और चालीस से नहीं डिगा, वह चार हजार से नहीं डिगता और चार हजार से नही डिगा वह चार लाख से नहीं डिगता। मतलब चार लाख से नहीं डिगा वह चार करोड़ से नहीं डिगेगा और आखिर इसका अंत आयेगा। जो अडिग है, उसे चार का क्या हिसाब? ऐसे चार लाख होने पर भी क्या हिसाब और चार अरब रहने पर भी क्या हिसाब? दादाजी यही कहना चाहते हैं कि भैया, इतना यह अज्ञान भय गया कि सर्व भय गये। भय अज्ञान का है, और किसी का भय है ही नहीं। लोगों का क्या भय रखना? वे तो बेचारे लट्टू जैसे हैं। वे अपने आप घूमते रहते हैं। किसी से टकरा भी जायें, कभी भी। मगर उनकी अपनी सत्ता नहीं है किसी की। 'मैं चंदूभाई हूँ' वहाँ तक भयवाले हो। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' तो निर्भय हो। हम शुद्धात्मा, फिर रह गया यह पड़ौसी (चंदूभाई)। यदि पड़ौसी से कोई लड़ने आये तो वह न्याय से हैं।

स्थिर को नहीं हिला सकता कोई

हमारे स्थिर होने पर दुनिया की कोई शक्ति हमारा नाम लेनेवाली नहीं है। यदि हम थोड़े-से हिल गये तो दूसरी सारी शक्तियाँ सवार हो जायेंगी। हमें हिलने की जरूरत नहीं है। अंदर भय लगे तो दादाजी हैं न सिर पर। 'मुझे कुछ होनेवाला नहीं' ऐसा कहकर रहिये। हमें हिलना नहीं है तो कोई शक्ति नाम नहीं लेगी। शक्ति देखा करे कि हिलना है कि नहीं? हिला कि वह देख लेगी। जरा-सा भी हिलने की जरूरत नहीं। हम हिले कि चंदूभाई की शामत आ गई। हम हिलें ही नहीं तो?

प्रश्नकर्ता : तो कुछ नहीं आनेवाला।

दादाश्री : हिलने के संयोग तो होते ही हैं, उसका नाम संसार। संसार किसका नाम कहलाये कि निरंतर हिलने के संयोग ही होते हैं। हिला, हिला, हिला करें, मगर हिलनेवाले को हिलने देना, खुद मत हिलना। स्थिरता रहे न ऐसी?

प्रश्नकर्ता : हाँजी।

दादाश्री : कोई भय नहीं लगता न? इन सभी को भय नहीं लगता, तो वह एक अजूबा है न! क्योंकि स्थिरता हो तो फिर भय नहीं लगता।

प्रश्नकर्ता : ऐसे दो-चार पहचानवाले, पुलिसवाले रखने चाहिए कि समय-समय पर आकर महात्माओं का टेस्ट करते रहें?

दादाश्री : हमारे कुछ महात्माओं का टेस्ट हो जाये। ये सभी महात्मा तैयार हो गये हैं। किसी चीज़ से नहीं डरते। क्योंकि रात-दिन उनको शिक्षा देकर (रात-दिन ज्ञान में उजागर करके) तैयार किये हैं।

प्रश्नकर्ता : वह तो टेस्टिंग का सामान मिलता रहे न?

दादाश्री : हाँ, इसलिये मुझे विश्वास हो गया कि ये लोग तैयार है। कुछ भी कीजिये न, फाँसी की सज़ा के लिये तैयार हो जाये ऐसे तैयार हुए हैं।

'चंदूभाई है क्या' कहकर हथकड़ी लेकर आये तो?

प्रश्नकर्ता : कहूँगा, 'ले जा'।

दादाश्री : ऐसा? याद नहीं आयेगा कि ये लोग मुझे क्या कहेंगे? हमने फौज़दार से कहा था कि, 'अच्छा हुआ, रस्सी लेकर आना था न, हरकत नहीं। उल्टे लोग कहें कि अंबालालभाई ऐसे हैं। ताकि लोगों को आनंद होगा बेचारों को!' सुनकर फौज़दार तो मौचक्का रह गया। मतलब हर परिस्थिति के लिये तैयार रहें। कैसी भी परिस्थिति आये! क्योंकि व्यवस्थित है न! व्यवस्थित के बाहर नहीं है न कुछ! अब समभाव से निपटारा करना पड़ेगा। तो क्या जवाब देंगे वह (हथकड़ी) लेकर आया हो तब? वह खुद लेकर आया है? नहीं, वह भी बाय ऑर्डर, किसी के ऑर्डर पर आया है।

प्रश्नकर्ता : उसके हाथ में कुछ नहीं है।

दादाश्री : वह भी बाय ऑर्डर और उस ऑर्डर देनेवाले साहब के हाथ में भी कुछ नहीं, सब हमारे कर्माधीन है।

प्रश्नकर्ता : इसमें तो अंदर का परमाणु भी नहीं हिलना चाहिए।

दादाश्री : एक परमाणु नहीं हिलना चाहिए। वही बात होनी चाहिए। सारा संसार तो मारे डर के पसीना-पसीना हो जाये, बिना गरमी के मौसम के। सर्दी के दिनों में पसीना आ जाये। मेरे साथ बैठनेवाले सभी को (ज्ञान की) शिक्षा देकर मजबूत करता हूँ। उन्हें इधर से उधर टकराता हूँ, उधर से इधर टकराता हूँ (ज्ञान में मजबूत करने के लिये)। भय रखने जैसी कोई चीज़ ही कहाँ है?

किसी का भय नहीं लगे, ऐसे बनिये

यह सब 'रिलेटीव' है। उनका खुद पर असर होता है वह भयंकर निर्बलता है। हमारे आस-पास में कोई भी घटना घटी, उसका खुद पर असर नहीं होना चाहिए।

वीतराग कब कहलाये? इस संसार की किसी भी चीज़ का भय न लगे तब। वीतराग का सारांश क्या? निर्भयता !

इस संसार में कोई किसी का कुछ नहीं कर सके ऐसा यह जगत नियमाधीन है। इसलिये भड़कीये मत। और जो भड़क आनेवाली है वह आपके किसी उपाय से टलनेवाली नहीं है। क्योंकि मैं ने तो जगत निर्दोष देखा था, दोषी कोई है ही नहीं। यह मैं ने देखा था। इस जगत में कोई जीव दोषी नहीं है। यह मेरी दृष्टि में रहा ही करता ही है, निरंतर। जो कुछ भी दोष हैं, वे मेरे ही कर्मों के परिणाम हैं।

कोई जीव ऐसा नहीं है कि आपका बनाया हुआ डिज़ाइन बिगाड़ सके। आपका डिज़ाइन ही है यह सारा। किसी का भी दखल नहीं है। उस राह पर लुटेरे होने पर भी लाखों रूपयों के गहने पहन

कर आप गुजर जाये पर कोई आपका नाम नहीं ले ऐसा यह जगत है। किसी तरह से भड़कने की जरूरत नहीं है।

किसी को भय नहीं लगे, ऐसा जीवन बनाईये

जहाँ खुद ने, खुद से किसी को भय नहीं लगे ऐसा कर डाला होता है, उसे इस दुनिया में किसी प्रकार भड़कने की जरूरत नहीं है। खुद की भड़क नहीं लगनी चाहिए। यह तो खुद के जाने से पहले चिड़िया भी उड़ जाये। अरे, तु ऐसा कैसा पैदा हुआ कि चिड़िया भी उड़ जाये? चंचलता यह अलग वस्तु है मगर चिड़िया को भी थोड़ा एतबार आये, जानवर को भी थोड़ा एतबार आये, ऐसा तो होना चाहिए न? एतबार नहीं आना चाहिए? इस समय लाख साँप आयें न तो वे क्या देखते हैं, कि यह कैसा पोइज़नस (ज़हरिला) इन्सान है। वह आँखो की ओर देखता है। वह खुद पोइझनस है ऐसा उसे मालूम ही है। पर यदि वह (मनुष्य) पोइझनस हो तो 'दंश मारुं' कहेगा। और उसमें कुछ ऐसा नहीं देखा तो कुछ भी किये बगैर चला जाता है।

प्रश्नकर्ता : दूसरों को भड़का कर मार डाले उसे क्या कहते हैं? उसका फल कैसा मिलता है?

दादाश्री : उनसे भड़कने की हमें जरूरत नहीं है। दूसरों को भड़काने की इच्छा ही नहीं होनी चाहिए। किसी को भय नहीं लगे ऐसा जीवन होना चाहिए। यहाँ ऐसा जीवन बनाईये। साथ में क्या ले जाना है, बिना वजह भय फैलाकर?

महात्माओं को भय नहीं मगर भड़क

हमने अब शुद्धात्म पद पाया है। क्या कमी रही है अब? कोई कमी नहीं रही।

प्रश्नकर्ता : कोई कमी नज़र नहीं आती मगर थोड़ा भय रहता है।

दादाश्री : वह भय नहीं है। यह ज्ञान नहीं दिया हो उसे भय लगता है। सारा जगत भयग्रस्त है। और हमारे महात्मा यह ज्ञान पाने के बाद भय में नहीं होते, मगर भड़क में होते हैं। भय अज्ञान से है। भड़क देह का गुण है।

प्रश्नकर्ता : भड़क माने क्या?

दादाश्री : देह का गुण है, मतलब एक खिलौने में चाबी भरी हो तो जैसी चाबी भरी होती है वैसे ही खिलौना चलता है। वह उसका मूल गुण नहीं है। उसी प्रकार भड़क देह के साथ बुनी गई है। इसलिये हमें नहीं करनी हो तो भी हो जाती हैं। यहाँ कोई धमाका होगा तो हमारी आँख नहीं चाहते हुए भी बंद हो जायेगी, ऐसी वह भड़क है। इसलिये ज्ञान देने के बाद भड़क रहती है और अज्ञान होने पर भय रहेगा। भय अज्ञान से है।

इस संसार को भय रहता है वह अज्ञान का भय है। अज्ञान का भय गया यानी भय रहा नहीं, भड़क रही।

इस समय कोई नई तरह की आवाज़ होने पर हमारा शरीर भी काँप उठेगा। ऐसे-ऐसे (थरथराने का अभिनय)! अब कोई कहे कि भैया, दादाजी सचमुच काँप गये क्या? तब कहे, नहीं, दादाजी के पेट का पानी भी हिले ऐसा नहीं है! मगर यह भड़क? वह संगी चेतना कहलाती है। संग के कारण खुद चेतन भाव को प्राप्त हुई है।

आत्मा के अज्ञान के कारण भय रहता है और संगी चेतना से भड़क रहती है। भड़क, फड़फड़ाहट यह संगी चेतना का गुण है। संगी चेतना यानी आरोपित चेतना। कोई विधि कर रहा हो कि ध्यान करता हो और कोई बड़ा धमाका होने पर शरीर ऑटोमेटिक हिल उठेगा, वह संगी चेतना कहलाये।

डिफेक्ट (त्रुटि) जाननेवाला आत्मा

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मेरी बड़ी डिफेक्ट एक ही है कि...

दादाश्री : डिफेक्ट है मगर जानते हो न? तो आप आत्मा हैं। आपको कहाँ डिफेक्ट है? डिफेक्ट तो, यह पुद्गल (शरीर) ऐसा है, उसमें हमारा क्या नुकसान है? दादाजी सिर पर हैं और पुद्गल राशी होगा तो दादाजी चला लेंगे मगर हम क्यों सिर पर लें? आप चंदूभाई थे वहाँ तक सिर पर लेना पड़ता था। अब चंदूभाई नहीं रहे, फिर चंदूभाई का बोझ हम क्यों ढोयें? पड़ौसी को तो रीति अनुसार होता है। वह रोये तो हम भी रोने लगें? यह चंदूभाई ऐसे हैं ऐसा जानें, उसी का ही नाम ज्ञान!

तू आत्मा है और यह पुद्गल है। तुझे भड़क होगी तो सवार हो जायेगा। सारा वर्ल्ड इधर-उधर हो जाये। इस देह को बुखार चढ़े कि पक्षाघात हो या जल जाये, पर भड़के वह हम नहीं। पुद्गल का घाटा है, अपने को घाटा नहीं होता कभी। नुकसान होगा तो पुद्गल के घर का, हमारे घर में अब घाटा आता ही नहीं। दोनों का व्यापार अलग, व्यवहार अलग। सेठ और दुकान अलग होते हैं कि एक होते हैं?

प्रश्नकर्ता : अलग-अलग।

दादाश्री : तब दुकान सुलगने पर मानों मैं सुलगा ऐसा क्यों? अरे, तू कहाँ सुलगता है? दुकान सुलगती है। चल, हम चाय पीयें। वहाँ मैं सुलगा, मैं सुलगा, परायी चीज़ सिर पे लिये फिरता है।

प्रश्नकर्ता : ऐसी घटना घटने पर आर्तध्यान-रौद्रध्यान होते हैं, फिर प्रतिक्रमण भी करता हूँ।

दादाश्री : आर्तध्यान-रौद्रध्यान उसे नहीं कहते। वह आर्तध्यान-रौद्रध्यान आपको नहीं होता। आप तो आत्मा हैं, वह तो चंदूभाई को होता हैं। जब उसमें चंदुभाई के लिये बर्दाश्त से बाहर हो जाये तब कहना, 'भैया, ज़रा आहिस्ता से काम लो।' और बातें करते समय यह फाईल नंबर वन (चंदूभाई) तेरी, वह सामनेवाले व्यक्ति के साथ बात करें, उसे तू भी 'जाने' और वह भी 'जाने' कि क्या बातचीत हो रही है। हम ज्ञाता-द्रष्टा-परमानंदी। हमारा स्व-भाव हमारे में।

चंदूभाई को सयानपन आया हो तो सयानेपन को देखें, 'अहह! बड़े सयाने है!' पागलपन दिखाये तो पागलपन देखें। उलझन में पड़ा हो तो उलझन में पड़ा देखें। उसके सिवा और क्या होनेवाला है? बचपन में कभी आप इमोशनल हुए थे क्या?

प्रश्नकर्ता : होते थे, अभी भी हो जाते हैं। पर ज्ञान लेने के बाद कम हो गया है।

दादाश्री : हाँ, मगर ज्ञान लेने के बाद आपके सिर जिम्मेदारी नहीं रही न? वह तो फिर चंदूभाई की जिम्मेदारी न? तो आप जुदा, चंदूभाई जुदा। चंदूभाई इमोशनल होवे पर आप तो नहीं होते हैं न?

प्रश्नकर्ता : नहीं। कभी फिर दोनों एक हो जाते हैं और कभी जुदा हो जाते हैं।

दादाश्री : एक हो जायें वह अलग बात है, पर वह तो अलग हुआ है, इसलिये एक दिन वास्तव में अलग रहेगा फिर। इस समय दूसरे कमरे बराबर खाली नहीं हुए हैं न (दूसरे दोष खत्म नहीं हुए है), इसलिये अभी साथ रहना पड़े। दूसरे कमरे ज्यों-ज्यों खाली होते जायेंगे, त्यों-त्यों अलग होता जायेगा, अलग हुए हैं इसलिये।

डरने पर पौद्गलिक भूत सवार होंगे

पुद्गल भय यह पौद्गलिक भूत हैं सारे। उनसे हमें डरना नहीं होता। ये पौद्गलिक भूत कहे गये। 'हम' चंदूभाई से कहें, 'ऐसे वणिक की तरह करेंगे, ऐसा नहीं चलेगा। क्षत्रिय हो जाइये। और दु:खों को अभी आना हो तो आओ। 'चाहे पैर टूटो, सिर फटो' ('हम' डरनेवाले नहीं)। वह पुद्गल है, हम आत्मा अलग है।

ये तो सारे पौद्गलिक भूत (भय) हैं। आप डरेंगे तो आ लिपटेंगे। भीतर से आवाज आयी कि फाँसी पर लटकायेंगे तो? तब कहें कि, 'हाँ, करेक्ट है।' आत्मा को फाँसी नहीं है। आत्मा को कुछ नहीं। सारी पुद्गल की करामात है। फाँसी भी पुद्गल है,

और फाँसी देनेवाला भी पुद्गल है। आत्मा कभी फाँसी पर लटका नहीं। यह तो दृष्टि में आता नहीं है, इसलिये घबराहट होती हैं। पर 'ज्ञानी' की दृष्टि से उसकी दृष्टि मिल गई कि बात बन गई। इसके लिये ज्ञानी के पास परिचय में रहना पड़ता है।

आत्मप्रकाश सदा निर्लेप

प्रश्नकर्ता : हमारी प्रकृति जो है वह कुछ प्रकृति ऊपर जाती है और कुछ प्रकृति नीचे उतरती होती है।

दादाश्री : उन सभी प्रकृतियों को देखना ही है। यह मोटर गाड़ी की लाईट है वह बांद्रा की खाड़ी के कीचड़ को छुए, खाड़ी के पानी को छुए, खाड़ी की गंध को छुए, पर उस लाईट को कुछ नहीं छूता। वह लाईट कीचड़ को छूकर जायेगा पर कीचड़ उसे छूता नहीं, गंध नहीं छूए, कुछ भी नहीं छूता। हमें भय रखने का कोई कारण ही नहीं है कि लाईट कीचड़वाला हो जायेगा, दुर्गंधित हो जायेगा कि पानी में भीग जायेगा। यह लाईट यदि ऐसा है तो आत्मा का लाईट कितना सुंदर होगा? आत्मा लाईट (प्रकाश) स्वरूप ही है!

यह प्रेक्टिस भी करते रहना

यह ज्ञान ही मोक्ष तक पहुँचा दे ऐसा है। पर आपको अपनी जागृति से उसको बहुत मदद करनी चाहिए। फिर पुरुषार्थ करना चाहिए। जब तक आप चंदूभाई थे, तब तक प्रकृति थी। इसलिये प्रकृति जैसे नचाये वैसे आप नाचते थे। अब आप पुरुष हुए और प्रकृति अलग हो गई। पुरुष होने के बाद पुरुषार्थ उत्पन्न होता है। पुरुषार्थ में वह जागृति तो है ही। पुरुषार्थ में तो और क्या है? हमें तय करना चाहिए। स्थिरतापूर्वक सारी बातचीत करनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : इसका मतलब यह हुआ कि यह गलत और यह सही, इसका आग्रह नहीं रखना?

दादाश्री : गलत-सही तो मानो है ही नहीं। ऐसा आग्रह रखना ही नहीं। पर हमने कभी चखा नहीं हो और आपसे कहे कि आपने चोरी की है, ऐसा कभी सुना नहीं और कभी प्रेक्टिस भी की हो और अचानक ऐसा सुनने में आया तो क्या होगा वहाँ पर? मतलब इमोशनल हो जायेंगे। इसलिये हम चंदूभाई से कहें कि, 'भैया चोर ही हो, कोई चोर कहे तो घबराना नहीं।' ऐसा पहले से हमें कह के रखना चाहिए। हाँ, 'किसी के कहने पर घबराना मत, कोई धौल जमाये तब भी मत घबराना।' ऐसा हम कह के रखें, आगे से। वर्ना फिर कोई धौल तो नहीं जमाता पर बिनावजह यों ही हवा में हाथ चलाये तो भी असर हो जाता है। इसलिये ऐसी प्रेक्टिस रखनी चाहिए। ऐसी रिहर्सल करा लेना चाहिए। नहीं कराना चाहिए? करवाकर रखना अच्छा। किसी समय मुश्किल आने पर उस घड़ी रिहर्सल किया हुआ फलदायी होता है। वर्ना यह ज्ञान तो बहुतों को, कई मनुष्यों को समाधि में रखता है निरंतर!

अलग रखनें, यह समझ लेना

मतलब 'व्यवस्थित शक्ति' चंदूभाई का सब कुछ चलाती है। तब आपको तो उसे देखना ही है कि चंदूभाई क्या करते हैं और क्या नहीं? मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार, इनमें से किसी में हमें हस्तक्षेप करने की जरूरत नहीं। वह बुद्धि क्या कर रही है, उसे देखते रहना। उलटा करती हो उसे भी देखा करना, सही-गलत करती हो उसे भी देखा करना। पर वहाँ हमें हस्तक्षेप कब करना होगा कि चंदूभाई को बहुत सांसारिक मुश्किलें आ जायें, तब हमें 'मैं शुद्धात्मा हूँ, मैं आपके साथ हूँ' ऐसा कहने पर ऑल राईट हो जायेगा। सांसारिक मुश्किलें आये हाथ-पैर की, बहुत तकलीफ हो रही हो उस घड़ी, 'होने दो, मैं हूँ ना, घबराना मत' कहना और शारीरिक अड़चनें अधिक हो तब 'मेरी नहीं है' ऐसा कहने पर अलग रहेगा। क्योंकि लाइन ऑफ डिमार्केशन लगाई है। यह आपका और यह आपका नहीं, ऐसा सब। मतलब इसे रेग्युलर कोर्स (रोजमर्रा के क्रम) में थोड़ा समझ लेना ज़रूरी है। इसे भूलेंगे नहीं न, मैं जो बोल रहा हूँ उसे?

भरा हुआ माल खाली हो जायेगा

प्रश्नकर्ता : दादाजी के मिलने से पहले के जो बर्फ समान कर्म थे, वे अब सामायिक करने पर कम होंगे न?

दादाश्री : हाँ, कम हो जायें।

प्रश्नकर्ता : पर वे सर्वथा निर्मूल तो नहीं होनेवाले न?

दादाश्री : दिखाई दें। भड़काकर फिर चले जायें। भड़कायेंगे भी सही। बाकी अपने आप बक्सा (डिस्चार्ज कर्म) खाली होता रहें। बक्सा खाली होने के बाद फिर आपके खोजने पर भी नहीं मिलनेवाले। कम होने लगे हैं न? कम होते जायें, जैसे टंकी खाली होती जाये न, वैसे।

'अब हर्ज नहीं' नहीं बोला जायें

कईं लोगों के आचार अच्छे होते हैं, पर अंदर से बहुत ही खराब होते हैं। और हमारे महात्माओं के आचार भले ही खराब हों, फिर भी अंदर से कैसे सयाने!

प्रश्नकर्ता : यह बात सैद्धांतिक हैं, पर कभी-कभी हम से क्या हो जाता है कि दादाजी का जो वचन है, वह एकांतिक रूप से पकड़ लिया जाता है कि आचार-बाचार कुछ नहीं। अब अंदर का सब देखो।

दादाश्री : उसे पकड़ लेते हैं, बस। उसे पकड़ लेना जरूरी नहीं है। आपको समझने की जरूरत है कि भय नहीं रखना चाहिए, ऐसा हो जाने पर। पर यदि पकड़कर चलेंगे तो आपका कच्चा रह जायेगा।

प्रश्नकर्ता : पकड़ लेते हैं और उसके बचाव में लग जाते हैं।

दादाश्री : नहीं, बचाव पक्ष में नहीं बैठ सकते। ऐसा है न, कि जैसे कुएँ में नहीं गिरना है, ऐसा निश्चय आपका हमेशा दृढ होता है न? यहाँ पर सौ-दो सौ कुएँ हो और वहाँ से होते हुए रास्ते पर आना-जाना होता हो, तो अँधेरे में उसमें गिर नहीं पड़ते। क्योंकि आपका निश्चय है कि कुछ भी हो जाये, मुझे कुएँ में गिरना नहीं है, इसलिये नहीं गिरते। पर यदि आप कुएँ के बचाव में जायें तो गिर पड़ेंगे। निश्चय तो होना चाहिए न आपका, यह मैं किस लिये कहता हूँ? आपको पकड़ में लेने के लिये नहीं, आपको भय रहित बनाने के लिये कहता हूँ। आपके बाह्याचार ऐसे टेढ़े हैं, लेकिन उसका हर्ज नहीं। आपको वह पकड़ लेने की ज़रूरत नहीं है, आप तो ऐसा ही रखें कि यह होना ही नहीं चाहिए, बस। फिर हो जाता है जो, उसे लेट गो करते हैं। हम व्यवस्थित किसे कहते हैं कि भैया, आँख खुली रखकर गाड़ी चला और वह भी सावधानी के साथ चला और फिर टकराई, वह व्यवस्थित। फिर आपसे गुनाह हो जाये तो उसमें हर्ज नहीं है। वह व्यवस्थित है पर यह सावधानीपूर्वक होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आप ऐसा निर्भय बनाने को कहते हैं पर साथ-साथ हमारा बर्ताव इस समय ऐसा है, जिसे देखकर मुझे ऐसा विचार नहीं आना चाहिए कि यह मैं कैसा माल भरकर लाया हूँ?

दादाश्री : वह तो विचार आना ही चाहिए कि मैं ने यह कैसा माल भरा है? पर वह तो सबको आता है। सब थक जायें, ऊब जाये, और सब को पसंद भी नहीं आता न ऐसा, मगर करें क्या? और कोई उपाय ही नहीं है न?

मतलब आपको केवल इतना ही नहीं बोलना चाहिए कि 'अब मुझे कोई हर्ज नहीं।' ऐसा आपको बेख़बर नहीं बोलना चाहिए। इतना हम बताना चाहते हैं। बाकी, हमने जो दिया है, वह तो आपको कुछ होनेवाला नहीं ऐसा समझकर ही दिया है, यदि आप बेखबर नहीं बोलें तो।

प्रश्नकर्ता : मगर दादाजी, आपका ज्ञान यह हुआ, सब हुआ, अब मैं ऐसा कहूँ कि अब मुझे वकालत करने में कोई हर्ज नहीं है, तो फिर?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं बोल सकते। आप वकालत कीजिये, जितना समय करना चाहें कीजिये पर यह 'हर्ज नहीं' ऐसा बोले, वह उस कानून का उल्लंघन है। जोखिम पैदा मत करो। ऐसा ज़ोखिम पैदा करना और दो पटरियों के बीच की फिश-प्लेट निकाल देना, दोनों समान है। उससे गाड़ी डी-रेल हो जायेगी (पटरी से उतर जायेगी)। ऐसा नहीं बोलते। बोलना किस लिये? इसी लिये तो हमने कहा है कि, 'बेखबर में मत बोलना कि मुझे कुछ भी बाधक होनेवाला नहीं है।' अब ऐसा मत बोलना। क्योंकि लोग किसी को दिखाने के लिये पावर में बोलते हैं कि 'अब हमारे सिर पर दादाजी हैं, हमें कुछ नहीं होनेवाला।' ऐसा पावर बाधा कर्ता होगा, नहीं बोला जायें ऐसा।

प्रश्नकर्ता : आपने तो बहुत बड़ा सरल-सुगम मार्ग बता दिया है पर फिर यदि सतत जागृति नहीं रखेंगे और पाँच आज्ञाओं का पालन यदि नहीं हुआ तो दादाजी ने जो ज्ञान दिया है वह शस्त्र के रूप में परिणमित होगा?

दादाश्री : तो भटक जाये। फिर भी कई अवतार कम हो जायेंगे। पर यह जो आपकी धारणा हैं उस स्थान पर जल्दी नहीं पहुँचेंगे, यदि पाँच आज्ञाये बंद हो गईं तो। यह सारा काल ही कुसंग का काल है। घर में कुसंग, ऑफिस में कुसंग, व्यापार में कुसंग, जहाँ देखो वहाँ कुसंग, कुसंग और कुसंग। यह आज के जो सत्संग बाहर चलते हैं वह भी निरा कुसंग ही है। यदि आप यहाँ से कहीं और जगह जायें न, तो वह आपके लिये कुसंग है। अब ऐसे काल में यदि ये पाँच आज्ञा नहीं रहीं तो कोई कुसंग उसे निगल जायेगा। मतलब पाँच आज्ञा पालने पर उसे कुसंग छूएगा नहीं। वर्ना यहाँ पड़े रहिये, पाँच आज्ञा नहीं पालनी हों तो मेरे पास पड़े रहिये, तब भी कुसंग नहीं छूएगा। फिर भी यह ज्ञान पाता है, तब से पोज़िटिव भाव तो हो ही जाता उसे, अंदर में।

प्रश्नकर्ता : हो ही जायें, सही है दादाजी। आपने कहा कि पोज़िटिव हुए इसलिये संयोग आ मिलेंगे।

दादाश्री : मनुष्य में जो नेगेटिव होता है वह उलझन में डालता है, इसलिये पोज़िटिव ही रहिये। इस जगत में जहाँ तक मनुष्य भय से थरथराता है, वहाँ तक किसी भी प्रकार का धर्म प्राप्त नहीं कर सकता। हम 'आपका कोई बाप भी अधिकारी नहीं है' कहकर आपके भय, फड़फड़ाहट चहुँ ओर से निकाल देते हैं और आपका दूसरा कोई भय रहा तो वह भी निकाल देते हैं। उसका अर्थ आप नेगेटिव में ले जायें तो बुरा होगा, ऐसी छूट देना नहीं चाहते!

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हम आपसे हमारे विकास में क्या क्या भयस्थान है यह भी पूछ लें। क्योंकि फिर आपका कोई विधान ऐसा हम बिना आधार उठा लें उसके बजाय यहाँ पूछ लें तो क्या बाधा है?

दादाश्री : बिना आधार के विधान उठा लेने पर बड़ी मुश्किल में पड़ जायें। मुझे पूछें न तो बाधा नहीं आयेगी। और 'अब मुझे कुछ छूनेवाला नहीं' ऐसा बोलने में वह अकेला जोखिम है। हमने कहा है न कि, 'विषय विष नहीं है, विषय में निडरता विष है।' इसलिये मुझसे कहते हैं कि, 'मुझे अब कुछ नहीं होगा, दादाजी का हो गया हूँ इसलिये।' निडरता हुई वही विष है। बेखबर हो गया कि खतम हो गया। वह स्थान ही नहीं होता। न तो आप आत्मा में कि नहीं है आप फाइल में, ऐसी बेखबरी? यह 'मुझे कुछ छूता नहीं' आया कहाँ से?

प्रश्नकर्ता : सही है, वे लोग आत्मा में भी नहीं है और फाइल में भी नहीं है।

दादाश्री : इन दोनों में नहीं है और यह नया कहाँ से आया? मतलब, वह जोखिमवाला है। इसलिये हम कहते हैं कि 'भैया, हम आपको ऐसा भय निकालने हेतु कहते हैं कि विषय विष नहीं है पर विषयों में निडरता विष है।'

क्योंकि इस आचरण के जोखिम नहीं है, यह सब मैं ने ज्ञान में देखकर बताया है। वर्ना इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी कौन मोल लेगा? वह बहुत बड़ी जिम्मेदारी कहलाती है। और तभी आप बिलकुल निवृत ही हो जायें और तभी आप इस भय से छूटें। भय से छूट जायें और आपकी अन्य शंका-कुशंका आदि जो सारे वहम थे, वे सारे उड़ जायें। ऐसा हो जायेगा और वैसा हो जायेगा, ऐसा कुछ भी होनेवाला नहीं है, मूए। तुझे कुछ भी होनेवाला नहीं, मैं हूँ और तू है।

शुद्धता में रहने के लिये 'शुद्धात्मा'

प्रश्नकर्ता : हम शुद्धात्मा हैं, वहाँ द्वन्द्व नहीं हैं, वह बराबर है मगर 'शुद्ध' शब्द का प्रयोग क्यों करना पड़ता है?

दादाश्री : हाँ, उसकी बहुत जरूरत है, वह तो वैज्ञानिक शब्द है। शुद्ध बोलना। क्यों आत्मा नहीं बोला? तब कहते हैं, ज्ञानी पुरुष ने तुझे शुद्धात्मा पद दिया और उसके बाद चंदूभाई से, सारी दुनिया निंदा करे, ऐसा अघटित कार्य हो जाये तब भी तू शुद्ध है, यह नहीं छोड़ेगा तो तेरा कोई बाल भी बाँका करनेवाला नहीं है। यदि तेरी श्रद्धा डगमगाई कि मार खाई। तू शुद्धता मत छोड़ना। वह कर्म पूरा होता रहेगा। कर्म अपना फल देकर पूरा होता रहेगा। वर्ना मन में अंदेशा रहे कि यह खराब कर्म हुआ इसलिये मैं बिगड़ गया। बिगड़ा माने गॉन। मतलब कैसा भी बुरा कर्म हो जाये, सारा जगत निंदा करे फिर भी आपका शुद्धात्मा पद नहीं टूटे ऐसा यह ज्ञान मैं ने दिया है।

फिर भी मन में यदि कोई ऐसा कहे कि अब मुझे कोई हर्ज नहीं तो भी वह लटका समजिये! हाँ, डरते रहना, डरते रहना ही चाहिए। हम कहें, 'चंदूभाई, डरकर चलिये, महावीर भगवान भी डरकर चले थे।' पड़ौसी से क्या कहना? भय मत रखो मगर डरो।

ऐसा निश्चय छुड़वाये लालचें

'कोई वस्तु नहीं चाहिए' ऐसा तय किया, तब से लालच शब्द ही उड़ जायें। वर्ना लालच ही जोखिम है न? क्रिया का जोखिम नहीं, लालच का जोखिम है। 'कोई भी वस्तु नहीं चाहिए', फिर हम वस्तु लें, वह अलग बात है। बाकी, लालच हमें नहीं होता। लालच तो नर्क में ले जाये और ज्ञान पचने नहीं देता।

प्रश्नकर्ता : इस ज्ञान के पश्चात् भी ये लालचें सारी रहेगी?

दादाश्री : किसी को रहें।

प्रश्नकर्ता : उसे इन लालचों से छूटना हो तो कैसे छूटे?

दादाश्री : वह यदि ऐसा निश्चय करे तो सब छूट जाये। लालच से तो छूटना चाहिए ही न? खुद के हित के लिये है न? निश्चय करने के बाद, लालच छूटने के बाद, उस ओर सुख ही लगेगा। वह तो अधिक सुखदायी लगेगा। आराम महसूस होगा उल्टे। यह तो उसे भय है कि यह मेरा सुख चला जायेगा। मगर वह छूटने के बाद तो अधिक सुख महसूस होगा।

प्रश्नकर्ता : मगर वह भय नहीं निकलता, वहाँ तक वह लाभ नहीं होता न? वह भय होने का कारण इस ओर का निश्चय होने नहीं देता न, उसे?

दादाश्री : मतलब भय को लेकर उसका लालच छूटता नहीं है। और उसे भय है कि 'यह मेरा सुख चला जायेगा।' अरे, उसे यहाँ से जाने दे, तभी वह आयेगा।

भयभीत करानेवालों को अलग पहचानो

हमारा तो यह आत्मज्ञान है, कोई ऐसी-वैसी वस्तु नहीं। यह तो अजायब वस्तु आपको प्राप्त हुई है। और ये जो सारे भाव आते हैं न, मन के भाव, बुद्धि के भाव, वे सारे भाव केवल भयभीत करानेवाले ही हैं। एक बार समझ लेना कि ये भाव केवल भयभीत करानेवाले हैं और जहाँ तक बुद्धि इस्तेमाल

होती है, वहाँ तक बखेड़ा ही खड़ा किया करती है।

भय की गांठ, मन में

मन यानी जैसे अनार (आतिशबाजी) फूटता है वैसे फूटता रहता है। पिछले जन्म के ज्ञान के आधार पर माल भरा था, अब इस जन्म के ज्ञान में फिट होता नहीं, इसलिये संघर्ष होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : मान की गाँठ हो तो?

दादाश्री : मान की गाँठ रहीं तो वह गाँठ फूटने पर हमें भय, भय और भय, ऐसा-वैसा सब दिखलायें। वह जो लौकिक ज्ञान है सारा वह भय और ऐसा सब दिखलायें। वे सारी गाँठे फूटती रहे। उनमें से कौन-सी अधिक फूटती है पूरे दिन में? वह गाँठ बड़ी।

प्रश्नकर्ता : जहाँ भय लगे वहाँ मन जाता ही है।

दादाश्री : मन से हमारा कोई लेना भी नहीं और देना भी नहीं। नहाने का भी नहीं और निचोड़ने का भी नहीं। पड़ोस के कमरे में लोग उधम मचाते हों, बातें करते हों, सिरफोड़ी करते हों तो हमें क्या लेना-देना? वैसे यह पड़ोस की रूम में मन है, बुद्धि है, चित्त है, अहंकार है, सब उछल कूद करते हों तो हमारा क्या? हम उन्हें देखा करें। हमारे उनसे नहाना भी नहीं और निचोड़ना भी नहीं। उनसे हमारा सात पुश्तों का भी रिश्ता नहीं है।

अज्ञान से अनादि का परिचय था, इसलिये अभी भी अज्ञान खड़ा रहता है । इसलिये हम उनसे कहें कि चाहे उतना शोर मचाओ, हम सुननेवाले नहीं है। हम शुद्धात्मा हुए पर अज्ञान से अनादि परिचय है, इसलिये आदत जाती नहीं।

ट्रेन में भयंकर भीड़ के कारण मन अपनी रक्षा खोजता है। मतलब विचार नहीं आते तब बड़ा मज़ा आता है।

मन तो अनेकों तरह की उलझनें भर लाये।

प्रश्नकर्ता : मन तो भर लाये, पर साथ में चित्त, बुद्धि, अहंकार और काया को भी हिलाते हिलाते निकल जाता है न? मन अकेले जाता रहे तो हर्ज नहीं पर यह तो सभी को हिलाकर जाता है।

दादाश्री : यह तो सारा साम्राज्य ही एक तरह का। अनात्म विभाग सारा, फोरिन डिपार्टमेन्ट पूरा।

वह नहीं है आत्मशक्ति

प्रश्नकर्ता : कभी-कभी ऐसा लगता है कि विचार यह आत्मा की शक्ति है?

दादाश्री : नहीं, वह मन का स्वभाव है और मन पौद्गलिक वस्तु है। और क्या पूछना है?

प्रश्नकर्ता : आत्मा को यदि विचार शक्ति नहीं है तो हमें जो चलाते हैं, वे मन-बुद्धि चलाते हैं, तो उनसे कैसे बचना, क्या करना?

दादाश्री : अनुसरना नहीं। वह सब देखा करना। मन क्या विचार करता है? मन बुरे विचार करे उसे भी देखना और अच्छे विचार करे उसे भी देखना। बस, देखा करना। बाहर जो आ मिले वे स्थूल संयोग और मन जो दिखाये, बुरे विचार करता हो, अच्छे विचार करता हो, किसी का बुरा चिंतवन करता हो, वह सूक्ष्म संयोग कहलाये। वह सब हम देखा करें, केवल उसका निरीक्षण किया करें। और कुछ हमें नहीं करना है। विचार वह हमारी शक्ति नहीं है। उस शक्ति को खुद की समझने के कारण ही यह संसार खड़ा हुआ है। फिर मन ऐसा कहेगा, 'रास्ते में कही गाड़ी टकरा जायेगी तो क्या होगा?' तब हम कहें, 'क्या होगा वह हम देख लेंगे।' हम तो देखनेवाले हैं न? जाननहारे और देखनहारे है। और क्या होनेवाला है? मन हमें डराये कि रास्ते में क्या होगा? मगर उस घड़ी क्या होगा वह देखेंगे, जो होगा देखेंगे और वह 'व्यवस्थित' है। 'व्यवस्थित' के बाहर कुछ होनेवाला नहीं है। 'व्यवस्थित' ऐसा सुआयोजित है कि जरा-सा भी अव्यवस्थित नहीं होता।

मन का विरोधाभासी रूख

प्रश्नकर्ता : मन में विचार तो कई तरह के आते हैं। मन बिलकुल शून्य तो होता नहीं है। विचार तो आते ही रहे।

दादाश्री : ऐसा है न, यह आपको पसंद नहीं है ऐसा बोलेगा तो कान फिर सुने बगैर रहेंगे क्या? आप कान से कहें कि तुम मत सुनना, तो चलेगा क्या? सुनना कान का धर्म है। मन है तो आपको इन्फॉर्म (सुचित) करता है। यह ठीक है, यह भयवाला है। यह ऐसा है, वैसा है, ऐसा वह उसका धर्म बजाता है। उसमें से आपको जितना ग्रहण करने योग्य लगे, ग्रहण किजीये, बाकी छोड़ दिजीये। मन अपने धर्म में है।

हम सान्ताक्रुज़ से यहाँ टैक्सी में आते हों और किसी जगह गाड़ीयों में टकराव हो गया हो तो हमारा मन भी कहेगा कि आगे एक्सिडन्ट हो ऐसा लगता है। तब हम कहें, 'तेरी बात बराबर है, हमने नोट किया, हमें जागृत रहना होगा।' फिर दूसरा विचार आये कि 'ऐसा कुछ नहीं है कि जो आपका एक्सिडन्ट कराये।' तब हमें ऐसा कहना चाहिए कि 'उसको हमने नोट किया, नोटेड इट्स कन्टेन्ट।' फिर वह आगे की दूसरी बात करेगा। उसका ऐसा कोई इरादा नहीं कि आपको मारना ही है। मन का ऐसा स्वभाव नहीं है कि एक ही बात लेकर बैठ जाये। आपने मन का पता लगाया था कि वह एक ही बात को लेकर बैठा रहता है?

प्रश्नकर्ता : फिरता ही रहता है।

दादाश्री : यदि हम एक बात लेकर बैठ जायें तो वह बैठा रहे। यदि हम कहें कि तेरी बात को हमने नोट किया तो वह आगे दूसरी बात करेगा। और हम कहें कि, नहीं, तेरी बात सही है, अब क्या होगा? तो फिर घंटो लगा रहेगा।

हमें मालूम होगा कि किस-किस के विचार आते हैं। अंदर मन बिगड़े कि 'आज आपकी सास मर गई तो क्या होगा?' तब कहें, 'समझ गये हम।' फिर कहे, 'आपकी मौत होगी तो क्या होगा?' तब भी कहना, 'समझ गये वह भी।' अब तीसरी बात बता आगे की।' फिर ऐसा भी दिखायेगा, 'यदि कल मर गये तो इन सबका क्या होगा?' तब हम कहें, 'उसे हमने नोट किया।'

अरे, इतनी बडी उम्र में भी शादी की बात करे, ऐसा है इस मन का, कब क्या कहे यह नहीं कहा जायें। मगर उसे सुनकर हमें कुछ गुस्सा करने की जरूरत नहीं है। विधवा या विधुर होने को भी कहेगा, 'रंडापा आया तो क्या करेंगे?' तब कहें, 'भैया, आया रंडापा, चल अब आगे की बात कर।' मन को किच-किच करने की आदत हो गई है। उसको ख्याल में ही नहीं लें हम। एक पागल आदमी पीछे रहकर जा रहा हो, उसका हम क्या कर लेंगे? उसके समान समझ लेना।

विचार तो अपने आप आते हैं, क्या-क्या आते हैं उसे देखा करना, बस और कुछ नहीं। मन को कुछ ऐसा नहीं है कि ऐसा ही बोलना है। आप टेढ़े हुए तो वह टेढ़ा है। इसलिये नोटेड इट्स कन्टेन्ट्स (ब्यौरा नोट किया) ऐसा कह देना। हाँ, वर्ना कहेगा, 'मेरा सम्मान नहीं करते।' तेरा मान पहले रखना है, फिर मन कोई दु:ख देता है क्या? नहीं।

मतलब मन हमें सब इन्फॉर्म (सुचित) करता रहे। वर्ना यदि भय की जगह पर सूचित नहीं करता तो वह गुनहगार कहलाता। हाँ, इसलिये उसे एक्सेप्ट (स्वीकार) किया।

प्रश्नकर्ता : पर वह जिसने आपको इन्फॉर्म किया कि एक्सिडन्ट होवे ऐसा है, वह मन बोलता है ?

दादाश्री : वह मन बोला और फिर हम स्वीकार करें कि तेरा कहना बराबर है ताकि फिर आगे की बात करे। आगे फिर सत्संग की बात करे। उसको ऐसा नहीं है कि यह आपको पसंद नहीं है।

वह तो उसे जैसा दिखाई दिया ऐसा बोल देगा। मतलब यह सब सरकमस्टेन्शियल एविडन्स (सांयोगिक आधार) हैं। इसलिये उसको हमें नोट करना चाहिए। उसने भड़काया और हम भड़क गये तो फिर खतम हो गया। वह आपको भड़काने हेतु नहीं करता, वह तो आप सावधान रहें, बीवेर (सावधान) ऐसा कहता हैं। हम ऐसे नहीं डरते। अज्ञानी को डराकर मार डाले। 'एक्सिडेन्ट होगा तो' उतना समय तन्मयाकार हो जाये।

एकाग्रता, ड्राइविंग के समय

किसी दिन यहाँ से मुम्बई तक ड्राइविंग करेंगे न तो सब एकाग्र हो जाये, घर-बार सब भूल जायेंगे। देखिये, एकाग्रता रहती हैं कि नहीं? पूछ लेना उन लोगों से। वहाँ एकाग्रता रहती है, इसलिये सेठ लोग ड्राइवर होते है और ड्राइवर से कहते हैं, 'भाई, तू अंदर बैठ!' लोग कहते है कि इन सेठ लोग को ऐसा कैसा शौक है, गाड़ी चलाने का? पर उनका मन एकाग्र होता है न? वह जो व्यग्र होता है, वह ठीक हो जाता है, इसलिये आनंद होता है। सारा दिन व्यग्र, व्यग्र, भटक, भटक किया करता है और गाड़ी चलाने बैठा कि एकाग्रता! और यदि इसमें एकाग्र नहीं हो तो टकरा जाता। मतलब या तो भय से एकाग्र होता है या तो भगवान का आप को बहुत डर रहता होगा तो आप एकाग्र होंगे। या फिर भगवान पर रूचि उत्पन्न होती हो, रूपयों जैसी, लक्ष्मी जैसी रूचि उत्पन्न होने पर (एकाग्रता) होती है। ऐसी रूचि उत्पन्न करने क्या किया जायें? इसके लिये प्रयत्न करने चाहिए, बस।

मन बरते, रडार की तरह

मन उसका धर्म बजाता रहता है। मन कैसा है? रडार की तरह काम कर रहा है। यह प्लेन देखने के लिये जैसे रडार होता है न? ताकि रडार में दिखाई दे कि तीन एरोप्लेन इस तरफ से लड़ाई के लिये आ रहे हैं। उस घड़ी उसे देखनेवाला भड़कता नहीं है। भड़कने के लिये रडार नहीं दिखाता है। उस समय देखनेवाला दिशा बदल देगा कि इस दिशा से आ रहे हैं, इसलिये हम दूसरी दिशा में घूम जायें। ऐसा सदुपयोग करना है। ऐसे यह मन रडार जैसा दिखाता है। रडार जैसा उसका स्वभाव है। इसलिये नज़दीक में कही भय दिखाई देने पर शोर मचा देता है। जैसे रडार भड़काये न उसको, वैसे यहाँ मन भड़काये! वह कहेगा, 'अरे! पीछे प्लेन आये, अरे! प्लेन आते हैं कई।' हम कहें, 'हाँ, हम मोड़ लेते हैं, समझ गये।' मतलब कई बार रडार की तरह हेल्प करता है।

यह तो अंदर मन है केवल, वह टिमिडता (कायरता)वाला होता है। यों ही रडार की तरह शोर मचाने लगे कि 'वो आये, वो आये।' तब कहें, 'भैया, आने देना, हम दिशा बदल देते हैं। तू क्यों शोर मचाता है?' क्योंकि वह तो रडार की तरह हमें इन्फर्मेशन (सूचना) देगा तुरंत। हम समझ ले। वह यदि इन्फर्मेशन नहीं देता तो गलत कहलाये। मतलब सारी इन्फर्मेशन देता है।

आपको चेतावनी देता हैं। और जैसी माँगी वैसी दिखाता है आपको। उसमें उस बेचारे का क्या गुनाह? हम समझ लें कि यह तो रेडार है। उसे संयोग ऐसे लगने पर हमें चेताएँ, तब हम कहें कि नोट किया हमने। फिर सत्संग की बात निकालें। फिर ऐसा नहीं है कि वह पकड़ कर रखेगा। हम टेढ़े हैं। हम भड़क जाते हैं और फिर मन खिसकता नहीं। उसे समझाने पर नहीं भड़कता।

मन रडार को अलग जानो

प्रश्नकर्ता : यह मन जब कहता है, तब उसके कुछ पर्याय होते हैं तभी कहता है न?

दादाश्री : ऐसे संयोग दिखाई देने पर ही बोले वर्ना नहीं बोलता। पर संयोग सारे जैसे दिखाई देते हैं वैसे नहीं है पर उसे तो खुद को जैसा दिखता है वैसा बता दे। यह उसका कर्तव्य है। मन ड्युटी बाउन्ड (फर्ज परस्त) है। मतलब रडार तो चाहिए ही न? तब लोगों को इस रडार को निकाल बाहर करना

है। अरे, बिना माइन्ड के कैसे चलेगा? वह रडार है। मतलब माइन्ड तो चाहिए ही। वह भय की सूचना दे, अथवा आनंद की जगह होने पर वह भी दिखाये कि बहुत बढ़िया, आनंद की जगह है। और बाहर भय जैसा होने पर हम शुद्धात्मा की गुफा में घुस जाये और अगर उस वक्त एक्सिडन्ट हुआ तो हम शुद्धात्मा में रहे मतलब और कुछ नुकसान ही नहीं न? और मन दिखाता है उसमें हमारा क्या नुकसान?

संसारी लोग क्या कहते हैं? ऐसा भय मत दिखाना। उनको मन का दिखाना पसंद नहीं है। पर हमें भय दिखाये तो शुद्धात्मा में घुस जाते हैं (आत्मस्वरूप में आ जाते हैं)।

एब्नॉर्मल (अस्वाभाविक) विचार आने पर

हर किसी ने (महान पुरुषों ने) ऐसा कहा है कि बिना वजह चिंता किस लिये करते हैं? आपको तो फकत क्या करना है? विचार करना और विचार एब्नॉर्मल (अस्वाभाविक) हुए मतलब चिंता हुई कहलाये। विचार में एब्नॉर्मल हुए मतलब चिंता होने पर आप विचार बंद कर देना। जैसे बवंडर आने पर हम दरवाज़े बंद कर देते हैं न? ऐसे ही भीतर विचार एब्नॉर्मली आगे बढ़ने लगे कि रोक लगा देना। वर्ना वे फिर चिंता का रूप ले लेते हैं। फिर तरह-तरह के भय दिखाते हैं और तरह-तरह का दिखाते है। मतलब उस दिशा में जाना ही नहीं। हमारी जरूरत के मुताबिक विचार, बाकी के बंद।

संसार में कही आश्चर्य मत करना

प्रश्नकर्ता : आश्चर्यकारक न हो और भय होने पर भी मन अटकता है क्या?

दादाश्री : उसे भय कहें या आश्चर्य कहें, वहाँ मन अटक जाये।

ये सभी को आत्मज्ञान देते हैं न, इसलिये भय चला जाता है। पर फिर इससे एक आश्चर्य हो जाता है उसे कि फिर क्या हो गया? शक्कर नहीं है ऐसा सुनने पर थोड़े समय के लिये, अधिक नहीं उलझता, पर दो-तीन मिनट के लिये उलझ जाये। विचार भी आते कि क्या करना, ऐसा करें, वैसा करें। रास्ते खोजने लगे और फिर उसमें उलझता रहे, मानो अभी शक्कर लानी हो, ऐसा! शक्कर लानी तो कल है, फिर इस समय उलझने की क्या जरूरत है?

प्रश्नकर्ता : मन में व्यवस्था में लग जाये कि कैसे लाना?

दादाश्री : वह व्यवस्था सुबह तक नहीं ठहरती। सुबह होते भूल गया होता हैं। यह तो उसे (पहले की) बुरी आदत जो हो गई है।

अब तो आधार तोड़ना, यही पुरुषार्थ

प्रश्नकर्ता : वह निश्चिंत, निर्भय नहीं होता तो दिया गया आत्मा भी जाता रहे न?

दादाश्री : नहीं, वह तो फिर उसमें रहा ही नहीं न! हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता। पर वस्तुस्थिति में प्रयोग करना चाहिए। अनादि से संसार किस आधार पर खड़ा है? जो आधार अभी टूटा नहीं है। मतलब उस आधार को तोड़ते रहना पड़ेगा। हमारा ज्ञान लेने के बाद क्या तोड़ते रहना पड़ेगा?

प्रश्नकर्ता : आधार तोड़ना चाहिए।

दादाश्री : जिस आधार पर जगत् खड़ा है, संसार खड़ा रहा है, उस आधार को तोड़ते रहना है, और कुछ नहीं। आधार तोड़ते रहो।

अब किस आधार पर जगत् खड़ा रहा है? तब कहें, मन के जो पर्याय हैं, मन की जो अवस्था है, उसमें आत्मा तन्मयाकार होता है। इसी से संसार खड़ा है। न ही बुद्धि परेशान करती है कि न ही और कोई परेशान करता है। यह तो आत्मा उसके अंदर तन्मयाकार हुआ, इसलिये संसार खड़ा रहा है। इसलिये मन के पर्यायों को तोड़ते रहना चाहिए। तन्मयाकार हुआ कि ये 'मेरे नहीं है, मेरे नहीं है' वहीं पर बैठकर करते ही रहना चाहिए। उसे तोड़ता रहा, कि मुक्त होता

गया। अनादि का अभ्यास है न, तो छूटने नहीं देता। इसलिये उसे मिठास लगती है। वह मिठास शुद्धात्मा को नहीं बरतती, वह अहंकार को बरतती है। इसलिये उसे तोड़-तोड़ करनी होगी। दोनों को अलग देखें। अलग ही देखना पड़े, तभी हल निकलेगा।

विचारों का विचित्र स्वभाव

विचारों का स्वभाव कैसा है? कसाईखाने में जायें ऐसे विचार आये।

'शेषा में बाहिराभावा।' तब कहे, 'बाहिराभावा' कैसे पहचानें? बाहिरा भाव क्या किये हैं? तब कहें, 'सव्वे संजोग लख्खणा।' संयोग लक्षण के आधार पर से। चोरी करें, तो हमारी समझ में नहीं आयेगा कि क्या भाव किया था? हमारे पैसे कोई डुबानेवाला नहीं मिला तो हम नहीं समझें कि यह कौन-सा भाव किया था? हाँ, किसी को दबाने का विचार किया वही हमें दबाने आयेगा। यह हमारे विचार का परिणाम है, क्रिया का परिणाम नहीं है। लोग तो क्या समझे? मैं ने डुबोये होंगे इसलिये वह डुबायेगा नहीं, यह ऐसा नहीं है। तूने डुबाने के विचार किये इसलिये ही तेरे डुबोये। मतलब विचार को जानना। यह सारा भयंकर जोखिम है, विचार शब्द से तो भयंकर जोखिम है। कब तक जोखिम है? जब तक ज्ञान नहीं मिला तब तक। ज्ञान मिलने के बाद विचार होते ही नहीं। विचरने पर विचार होते है।

मतलब 'संयोग लख्खण' पर से खोज निकालना। एक दिन मन में विचार आया हो कि टकरा गये तो क्या हर्ज है? एक दिन ही बोले हों तो ऐसे विचार आयेंगे। प्रतिदिन मन में भाव किया हों कि कभी भी टकराना नहीं है, टकराना नहीं ऐसा विचार भी नहीं आता तो टकरायेंगे नहीं। मगर एक ही दिन ऐसा विचार आने पर वह बिना टकराये नहीं रहेगा। मतलब अविरोधाभास चाहिए। यह तो जगत में बहुत समझ-बूझ के साथ चलने जैसा है। जोखिमवाला, निरा जोखिम ही भरा हुआ है।

ज्ञान बदलने पर निर्भयता

मन के कहे अनुसार हम नहीं चल सकते। मन को अपने ध्येय अनुसार चलाना है।

हमने मकान बेच दिया हो और बच्चों को मालूम नहीं हो और मकान सुलग रहा हो तो बच्चे आग-बबूला हो उठेंगे! फिर वे शोर मचाते घर पर आयेंगे कि चलिये, चलिये, चलिये, हमारा मकान जल रहा है! तब बाप कहे, 'अरे भैया, कल बेच दिया है। अब छोड़ो न।' तब फिर कुछ भी नहीं। उल्टे ज्ञान से मार खाता है और सीधे ज्ञान से मार छूट जाती हैं। सीधा ज्ञान हुआ कि 'भैया, अब बेच दिया है।' तो वही का वही आदमी फिर परिवर्तित हो जाता है।

और मेरे साथ आप सब आ रहे हों और बीच में जंगल आया और वहाँ पर बाघ की दहाड़ सुनाई दी तो आप कहे कि यह बाघ की दहाड़ सुनाई देती है। इस पर मैं कहूँ कि, 'बाघ तो पिंजरे में है।' कि चल पड़ी गाड़ी! उसी तरह यह दुनिया चलानी है, अंदाजन, अंदाजन। वर्ना दुनिया में आदमी जी नहीं पाता। पिंजरे में होने पर भी यदि उसे मालूम नहीं है तो उसे डर लगनेवाला ही है न फिर? 'आया, आया, आया, करेगा।' बिना वजह, मरने से पहले मर जाना ये कहाँ की बात? मरने पर कहेंगे कि मर गये। पर मरने से पहले मर जाना कि 'हाय बाप, मर गया।' ऐसा डेढ़-सौ बार बोलता है, पर मरता एक बार भी नहीं। ऐसा बोलने की ज़रूरत ही क्या है?

मन की सुनना नहीं

नहीं डरने पर सारे इनाम मिलेंगे। डरने पर सारे भूत (भय) सवार हो जायेंगे। आपकी समझ में आई यह बात?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आई।

दादाश्री : तो तू क्या निश्चय लाया?

प्रश्नकर्ता : निश्चय तो नहीं लाया।

दादाश्री : निश्चय नहीं आता वहाँ फिर भीतर में कौन बोलता है? पार्लामेन्ट में कौन बोलता है? फिर किसका कहा बोलता है? मन का तो माने ही कैसे? ज्ञानी होने के बाद फिर मन का कौन माने? मन का मानने का अब थोड़ा छूटता जाता है न? पर वह सारा बंधा गया ही है न? मन का बाँधा गया इस ज्ञान से छोड़ सकें ऐसा है। पर उसे क्या टेस्ट (स्वाद) आता है कि मन का ही कबूल करता है?

मैं अपने महात्माओं से क्या कहता हूँ? मन का एक अक्षर भी मत मानना। 'मन का चलता तन चले ताका सर्वस्व जाय!' मतलब मन का सुनना ही छोड़ दीजिये। मन से तेरा क्या इतना गहरा संबंध है? ऐसी भूलें होती है क्या?

आपको बाद में बहुत नुकसान नहीं हो, इस लिये आपको सावधान करते हैं कि इसमें 'मन का चलता' छोड़ दीजिये चुपचाप, अपने स्वतंत्र निश्चय के साथ जीये। मन की यदि ज़रूरत रही तो हम लें और जरूरत नहीं रही तो छोड़ दें। बाजु पर कर दें उसे। क्योंकि यह मन तो पंद्रह-पंद्रह दिनों तक घुमा फिराकर फिर शादी करवाये ऐसा है। बड़े-बड़े संत भी भड़क गये थे, तो आपकी क्या मजाल हैं? जूते पहनना तो आता नहीं आपको!

मन तो ज्ञानी वश बरते

हमें मन की मानी हुई कोई वस्तु नहीं होती। हमें मन वश हो गया होता है। हमारा मन कुछ बोलता ही नहीं। हमें अभी थप्पड मारें तो भी हमें कुछ नहीं होगा, आशीर्वाद देंगे। कोई गालियाँ सुनाये तो भी आशीर्वाद देंगे। जेल में डाल दें तो भी पुलिसवाले को आशीर्वाद देंगे। पुलिसवालों से क्या कहेंगे, घर पर तो मुझे खुद दरवाजा बंद करना पड़ता था। यहाँ आप बंद कर देंगे। है कोई झमेला? बम गिरे भी पेट का पानी न हिले ऐसी शक्ति उत्पन्न होनी चाहिए। यह तो कलेजा धकधक होने लगे, भय, भय, भय। इसे तो जीवन ही कैसे कहलाये? आपको निर्भय होना है कि नहीं होना? निरंतर भयरहित होकर रहना है?

विचारों में तन्मयता नहीं

प्रश्नकर्ता : विचार सताते हों और चिंता करवाते हों, उसे कैसे रोकना?

दादाश्री : विचार करना, यह धर्म किसका है? वह आत्मा का धर्म नहीं है, मन का धर्म है। आपने तय किया हो कि ये सभी गालियाँ देते हैं, उस में से हमें कुछ सुनना नहीं है, तब भी कान का स्वभाव है सुन लेने का, इसलिये सुने बगैर नहीं रहेंगे। वैसा ही मन का स्वभाव है। हमे पसंद नहीं हो वैसे विचार भी उठेंगे। वह मन का स्वाभाविक धर्म है। विचार ज्ञेय हैं और हम ज्ञाता हैं, इसलिये जो भी विचार आया उसे हम देखा ही करें, निरीक्षण करते ही रहें। वे अच्छे है या बुरे है, उसका अभिप्राय हमें देना नहीं है। कैसे भी गलत विचार आयें, उसमें हर्ज नहीं है। जिन भावों से पूर्वबंध पड़े है, उसी भावों से निर्जरा होती है। उसे हमें देखा करना है कि ऐसा बंध पड़ा था, जिसकी निर्जरा हो रही है। यह ज्ञान हमारा 'संवर'वाला है, इसलिये अब नया कर्म बंधता नहीं है। विचारों में तन्मयाकार होने पर कर्म बंधता है।

प्रश्नकर्ता : इन विचारों का परिणाम क्या आयेगा?

दादाश्री : परिणाम 'व्यवस्थित' को सौंप दिया, हमें कोई लेना-देना नहीं है। हमें तो आराम से गाड़ी में बैठे रहना है। मन कहेगा, 'गाड़ी आगे जाकर टकरायेगी तो?' उसे हमें देखा ही करना है, बस। उसका परिणाम 'व्यवस्थित' को सौंपकर हम आराम से बैठे रहे।

प्रश्नकर्ता : यह सब इतना आसान नहीं है न?

दादाश्री : आसान है। जब से तय करें तब से रह सकते हैं। क्योंकि 'व्यवस्थित' के ताबे में है। परायों के ताबे में रहा और उसमें हम हस्तक्षेप करें तो उल्टे मूर्ख बनें। आपके ताबे में तो इतना ही है,

'देखना और जानना' कि हक़ीकत क्या बन रही है! जो कुछ उल्टा-सीधा करना होगा वह 'व्यवस्थित' करेगा। यथार्थ में 'व्यवस्थित' ऐसा नहीं होता कि कुछ बिगड़े। मनुष्य सत्तर साल का होकर मरता है, पर उससे पहले ही 'मर गया, मर गया' ऐसी बिना वजह चिख-पुकार किया करता है और भय से त्रस्त होता है। ऐसा भयभीत होने जैसा जगत ही नहीं है। मन हमें भी दिखायेंगा कि, 'आगे एक्सिडेन्ट होगा तो?' तब हम कहते हैं कि, 'तू ने जो कहा वह हमने नोट किया।' फिर वह दूसरी बात करेगा। मन को ऐसा नहीं है कि पहलेवाली बात पकड़ के रखे। मन के साथ तन्मयाकार नहीं होना। तन्मयाकार होने से तो जगत खड़ा हुआ है। मन के सारे भाव 'डिस्चार्ज' भाव हैं। उन 'डिस्चार्ज' भावों में यदि कहीं हम तन्मयाकार हुए तो 'चार्ज' भाव उत्पन्न होंगे। हम 'एलीवेशन' कि 'डिप्रेशन' अपने सिर पर नहीं ले। कुछ होनेवाला नहीं है। कुछ बिगड़ता नहीं है। मैं क्षण भर के लिये भी संसार में नहीं रहता हूँ, तब भी कुछ बिगड़ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मतलब भय नहीं रखना?

दादाश्री : हमें भय होता ही नहीं! 'हम शुद्धात्मा' मतलब 'हमें' कोई देख सके ऐसा नहीं है, नुकसान पहुँचा सके ऐसा नहीं है, मार सके ऐसा नहीं है, कोई नाम दे सके ऐसा नहीं है! यह तो खुद की (कल्पित) भड़क के कारण जगत् खड़ा हुआ है। बीच में किसी का दखल नहीं है। और यदि चंदूभाई थोड़े ढीले हुए हों तो 'हम' उसे आईने के सामने खड़े करके कंधा थपथपा कर कहें कि ''हम है न आपके साथ! पहले तो अकेले थे, घबराते थे, किसी को कह सकें ऐसा नहीं था। अब तो हम आपके साथ ही हैं। घबराते क्यों हो? हम 'भगवान' (शुद्धात्मा) हैं और आप 'चंदूभाई हैं। इसलिये घबराना नहीं'' यदि चंदूभाई बहुत 'एलिवेट' होते हो तो उसे कहना, 'हमारी सत्ता के कारण आपका इतना रौब जमता है।' मतलब हम 'होम डिपार्टमेन्ट' (रियल) में बैठे-बैठे फोरेन (रिलेटिव) का निपटाते रहें। यह निर्लेप 'ज्ञान' है, कुछ छूए नहीं ऐसा है।

चित्त ही भड़काये...

प्रश्नकर्ता : अब जरा चित्त के बारे में ठीक से समझाइये कि चित्त क्या-क्या गड़बड़ करता है?

दादाश्री : चित्त सब देख आता है। जो पिछली फिल्म पड़ी है, उसे चित्त देखता है और मन है तो अभिप्राय बांधता है।

प्रश्नकर्ता : पर राग और द्वेष करवाता है वह मन करवाता है?

दादाश्री : नहीं, मन तो सिर्फ अभिप्राय देता है कि यह अच्छा है और यह खराब है, यह अच्छा है और यह खराब है।

प्रश्नकर्ता : और मन के बारे में तो आपने बताया था कि वह अभिप्राय और गांठों का बना है।

दादाश्री : मन वह तो वस्तु ही नहीं है। वह तो केवल आप के अभिप्राय ही हैं और वह आपके क्या अभिप्राय थे, यह दिखाता है।

प्रश्नकर्ता : तब फिर हमारे संसार का मुख्य कारण मन है कि चित्त है?

दादाश्री : चित्त है। आप है तो किसी जगह गये हों और भड़क गयें हो, तो आपका चित्त बार-बार वहाँ ही जायेगा और आपको घर बैठे बार-बार भड़काता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : आप कहते हैं न कि अभिप्राय तो मन देता है, तब भड़काता कौन है?

दादाश्री : अभिप्राय तो मन बाँधता है। बाकी, चित्त ही भड़काता रहता है। भड़कनेवाली फिल्म देखी, इसलिये भड़क-भड़क किया करे। बाकी, चित सब देखा करता है। अब वह अभिप्राय तो उसे जो ज्ञान मिला हुआ है, उसके आधार पर देता है।

प्रश्नकर्ता : पर मनुष्य को बाँधता कौन है?

दादाश्री : चित्त ही बाँधता है।

चित्त ही खुद की पसंदीदा जगह पर और भय के स्थानों में विशेष भटकता है। दोपहर में रूम में साँप देखा हो तो सोते समय भी साँप याद आयेगा। चित्त को भय लगता है, तब उसी जगह बार-बार जाता है।

ऐसा वक्त भी आयेगा जब डॉक्टरों के चित्त कहीं के कहीं भटकेंगे। जब तक ऑपरेशन के समय चित्त हाजिर रहता है वहाँ तक अच्छा है। यदि चित्त की गैर-हाजिरी में ऑपरेशन करते तो दर्दी (मरीज़) के मरने के बाद जब जला दे तो जलाने ने के बाद अंदर से कैंची निकले! इसलिये तो मारे डर के डॉक्टर ऑपरेशन के समय चित्त को हाज़िर रखते हैं।

इन वकीलों को तो रोजाना ऐसा होता है। खाते-खाते वहाँ कोर्ट में पहुँच गये होते हैं। तब फिर मेरे सिखाने के बाद वे ठिकाने पर आते हैं।

इन वकीलों के भी चित्त बाहर जाते रहते हैं। वकील को भी घर पर खाते समय चित्त कोर्ट में पहुँच गया होता है। सही तरीके से तो कोई अपवाद ही अपनी जगह पर खाता होगा। ग्यारह बजने पर घड़ी देखता रहता है और वहाँ जज के पास पहुँच गया होता है। यह तो हमारे यहाँ 'ज्ञान' देने के बाद वकील आराम से खाते हैं। तब उनके अनुभव में भी आता है कि कोई काम बिगड़ता नहीं है। मुझे आकर बोलते भी हैं कि ''आज तो दादाजी, मैं सवा ग्यारह बजे कोर्ट पहुँचा था, मुझे ऐसा लग रहा था कि आज देर हो जायेगी। पर आपने चित्त हाजिर रखकर भोजन लेने को कहा था, इसलिये चित्त हाजिर रखकर मैं ने भोजन किया। फिर 'व्यवस्थित' को देखा। तब वहाँ तो जज साहब ही साढ़े ग्यारह बजे आये और केस मेरा ही पहले चलनेवाला था।'' मैं ने कहा कि, 'ऐसा ही होता है।' मतलब भड़कते क्यों है? यह जगत भड़कने जैसा नहीं है। जज की भी मालिकी है और आपकी भी मालिकी है, आरोपी की भी मालिकी है और फरियादी की भी मालिकी है। सभी की मालिकी का यह जगत् है और सभी के एडजस्टमेन्ट लिये जाते हैं, वह कोई गप्प नहीं है।

एक अवतार भड़क निकाल दें

प्रश्नकर्ता : हम समभाव से निपटारा करें, उसका कोई दुरूपयोग करता हो तो करने दें?

दादाश्री : दुरूपयोग करने की किसी की शक्ति नहीं है। और जो दुरूपयोग होनेवाला है, वह बंद होनेवाला नहीं है। जितना दुरूपयोग होना है, उसमें कोई फेर-फार हो सके ऐसा नहीं है। और नया दुरूपयोग करने की किसी की शक्ति नहीं है। इसलिये भड़क मत रखना। भड़क बिल्कुल निकाल देना। एक अवतार के लिये तो भड़क निकाल ही देना आप। उसकी गारन्टी हमारे पास है।

डिस्चार्ज में कहाँ है, भूल निकालने जैसा

मतलब इस दुनिया में सब कुछ डिस्चार्ज है। अब डिस्चार्ज में त्रुटियाँ निकालने में कोई स्वाद नहीं आयेगा। डिस्चार्ज की त्रुटियों से तो यह जगत् खड़ा रहा है। जिन्हें आप परिणाम कहते हैं उन्हें जगत् कॉजेज़ कहता है और इसलिये ही जगत उलझ रहा है। और 'यह आपने ही किया है' कहेंगे। आप कहते हैं कि, 'नहीं, यह परिणाम है, यह डिस्चार्ज है।' इसलिये आपको भय नहीं। आपके डिस्चार्ज उसे कॉज़ेज़ लगते हैं और कहेंगे कि, 'ऐसा वर्तन क्यों करते है?' अबे मूए, हमें भय नहीं लगता तो तुझे किसका भय लगता है? और यदि भय लगे तो दादाजी को लगना चाहिए कि, 'भैया, यह सभी मेरे फॉलोअर्स ऐसे कैसे हैं?' पर मैं तो जानता हूँ कि यह जो माल भरा हुआ है वह निकलता है। नया कहाँ से निकालनेवाला है?'

काम किये जाओ, 'व्यवस्थित' है

फाइलों का समभाव से निपटारा करना इतना ही काम करना है। यह तो 'व्यवस्थित' ही है, उसमें चिंता-उपाधि करने जैसा है ही नहीं। काम किये जाओ। हम क्या कहते हैं? काम जितना हो सके किया करो। फिर जो हो वह 'व्यवस्थित' है। पर आपको भय रखने का कोई कारण नहीं है।

क्या होता है, वह देखा करो

प्रश्नकर्ता : यदि कोई टेढ़ापन दिखाता हो पर हमारी सजा करने की सत्ता नहीं हो और अपने ऊपरी अधिकारी को उसे सजा करने के लिये रिपोर्ट करें और अधिकारी ने उसे सजा की। अब सजा अधिकारी ने की पर रिपोर्ट मैं ने की, इसलिये निमित्त मैं हुआ न?

दादाश्री : नहीं, क्योंकि मन में भाव 'हमारा' नहीं है, यह तो 'चंदूभाई' करते हैं। तब आपको क्या करना है? चंदूभाई जो करें उसे देखा करना। जगत तो चलता ही रहेगा। उसका कोई भय नहीं रखना। मन में ऐसे भाव रखना कि किसी जीव को दु:ख नहीं हो। फिर आप रूटीन काम किया करें। जो रूटिन होता हो, उसमें आप हस्तक्षेप मत करना, शंका-कुशंका मत करना। आप अपने स्वरूप में रहना। बाकी, फर्ज तो अदा करने ही होंगे न?

यह है एकावतारी ज्ञान

यह तो ज्ञान ही एक अवतारी है। एक अवतार भी किस लिये? हम आपको आज्ञा देते हैं, उस आज्ञा के अनुसार करते हैं। आज्ञा पालन में कर्ता भाव है। उसका पुण्य मिलता है और पुण्य फल भुगतने जाना पड़ता है, इसलिये एक अवतार है।

प्रश्नकर्ता : आज्ञा पालन करें तब भी दु:ख और नहीं करें तब भी दु:ख?

दादाश्री : पालन करें तो दु:ख नहीं है, पालन करें तो फायदा। नहीं पालने पर भय, जोखिम। दो-तीन अवतार अधिक होंगे।

मोक्ष में जानेवालें को...

प्रश्नकर्ता : मोक्ष में जाना आसान हो जाये ऐसी बात जो हो वह बताइए।

दादाश्री : कौन सी बात तुझे मुश्किल लगती है?

प्रश्नकर्ता : वह तो आप बतायें तब मालूम पड़े न?

दादाश्री : नहीं, मगर तुझे मुश्किल लगती होंगी न? उलझता हो तो मुश्किल कहलाये। दूसरी बार कहाँ नहीं उलझता है तू?

प्रश्नकर्ता : ऐसे कहीं उलझता नहीं हूँ।

दादाश्री : थोड़ा-बहुत उलझे न? अभी पुलिसवाले आये हों और हथकड़ी लाकर पहनाते हों तब.....एकदम घबड़ा जाये। मोक्ष में जाते यह तो आसान करना पड़ेगा न? उसमें चलता होगा? वह तो पुलिसवालों से हमें कहना चाहिए कि, 'भैया, आपने बहुत देर कर दी। क्यों इतनी देरी हुई? पुलिसवाले हथकड़ी लेकर आये हों और खोज़ते हों कि, 'भैया चंदूभाई कहाँ है?' फिर चंदूभाई के मन में क्या होता है?

प्रश्नकर्ता : दुविधा में पड़ जाये।

दादाश्री : दुविधाजनक तो मैं ने रखा ही नहीं है। मैं ने ज्ञान ऐसा दिया है कि उलझे नहीं। किसी भी परिस्थिति में उलझे नहीं ऐसा यह ज्ञान मैं ने दिया है। हथकड़ी लेकर आये तो क्या हो, इसकी हम तलास करें। और ले जानेवाला तो है ही। यह जो लेकर आया है, वह कुछ बिना लिये यों ही वापस थोड़े ही जानेवाला है?

प्रश्नकर्ता : नहीं जी।

दादाश्री : हम उसको शेक हेन्ड (हाथ मिला कर) करके जायें, उसमें गलत क्या? आया है तो

बिना लिये जानेवाला नहीं है। अब हमारा ज्ञान भी हम से कहता है कि 'व्यवस्थित है, समभाव से निपटारा कीजिये, फाइल आयी है।' मतलब हर तरह से हमें ज्ञान मिल गया। इसलिये हम उनसे कहें, 'आइये, आपसे शेक हेन्ड करते हैं, चाय पीकर जाइये।' हर्ज क्या?

प्रश्नकर्ता : ठीक है।

दादाश्री : यह मुझे नहीं लगता उतना टेस्टेड हुआ हो? टेस्टेड चाहिए न? ऐसा तो कहीं चलता होगा?

ज्ञानदशा में स्पंदन शमित हुए

इस कलिकाल में तो अच्छे कर्म करना नसीब नहीं होता और बुरे कर्मो का सहभागी होना पडता है। ज्ञान मिलने के बाद महात्माओं को बुरे कर्मो में गलत हो रहा है, यह ज्ञान को लेकर तो पसंद नहीं आता। मतलब कार्य गलत या सही हो तब भी वह निकाली बाबत हुई और उसके अनुसार जो स्पंदन उठेगा वह शमन हो जानेवाला है। पर मूढ़ात्म दशा में जिनको यह गलत हो रहा है ऐसा नहीं होता तो एक्शन यानी कार्य के स्पंदन और अज्ञान से खड़े होनेवाले नये रिएक्शन के भावों के स्पंदन, ऐसे डबल स्पंदन होते हैं। अज्ञान है इसलिये स्पंदन कब पैदा हो जाये यह कहा नहीं जायें, फिर चाहे वह संसारी हो कि त्यागी हो, कोई भी हो। क्योंकि जहाँ अज्ञान है वहाँ भय और भड़क है और जहाँ भय और भड़क है वहाँ स्पंदन अवश्य होनेवाले हैं।

गुप्त तत्त्व के आराधन से मोक्ष

अब भय कि कुछ फड़फडाने जैसा नहीं है न?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : जहाँ शुद्धात्मा वहाँ भय नहीं और भय है वहाँ शुद्धात्मा नहीं है।

शास्त्रकारों ने कहा है कि एक समय के लिये भी यदि आत्मा प्राप्त हुआ तो बहुत हो गया। एक समय के लिये भी आत्मा होकर बोला तो काम हो गया। आपको ज्ञान देने के बाद आप शुद्धात्मा फिर से बोलते हैं, वह आप आत्मा होकर, 'मैं शुद्धात्मा हूँ' बोलते हैं और वह अपने आप आता है। इसलिये आप आत्मा हो गये।

महावीर भगवान ने कहा, एक क्षण के लिये भी यदि आत्मा होकर आत्मा बोला मतलब मुक्त हो गया। ऐसे आप (आत्मा) होकर तो लम्बे अरसे से बोल-बोल करते हैं। और ये अन्य लोग 'मैं शुद्धात्मा' (बोलते हैं), वे शुद्धात्मा होकर नहीं बोलते। 'मैं शुद्धात्मा हूँ' ऐसा आत्मा होकर एक ही बार बोला, मतलब बहुत हो गया। और (यदि ऐसा) समझ गया कि यह मेरा और वह दूसरा सारा जो टिकाऊ नहीं, मेरा नहीं है, तब भी काम हो गया।

प्रश्नकर्ता : 'उस गुप्त तत्त्व की जो आराधना जो करता है, वह प्रत्यक्ष अमृत पाकर अभय होता हैं।' ऐसा कहा है न?

दादाश्री : हाँ, शुद्धात्मा की जो आराधना करता है, शुद्धात्मा होकर शुद्धात्मा बोलता है, वह प्रत्यक्ष अमृत को पाकर निर्भय होता है। क्योंकि यहाँ पर, जहाँ तक शुद्धात्मा का ज्ञान प्राप्त नहीं होता वहाँ तक, 'मैं चन्दूभाई हूँ' रहे वहाँ तक अंदर विष बिन्दु टपकते रहे निरंतर, मतलब सारी वाणी विष भरी, वर्तन विष भरा, मन-विचार विष भरे। और हमारे ज्ञान देने के बाद अंदर तुरंत ही वहाँ अमृत बिन्दु टपकने शुरू हो जायें। इससे देखिये, विचार, वाणी, वर्तन, सब आहिस्ता-आहिस्ता अमृतमय होते जायें।

अनौपचारिक व्यवहार में कर्मबंध कहाँ?

प्रश्नकर्ता : यह 'ज्ञान' लेने के बाद आपने 'व्यवहार' को निकाली बताया है, वह बात बराबर है। मगर उसमें कहीं कोई अनौपचारिक व्यवहार होता है, तो वहाँ पर 'चार्जिंग' का भयस्थान कहाँ है?

दादाश्री : 'चार्ज' हो जाये ऐसे भयस्थान होते ही नहीं। पर जहाँ शंका होगी वहाँ 'चार्ज' हो जायेगा। शंका होने पर वह भय स्थान 'चार्जिंगवाला' समझना। शंका माने कैसी शंका? कि नींद नहीं आये ऐसी शंका। छोटी सी शंका हो और बंद हो जाये ऐसी नहीं, क्योंकि शंका हुई और फिर उसे भूल गये ऐसी शंका की कीमत ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तब फिर बिंदास रहना? निडर और बेखबर रहना?

दादाश्री : नहीं, बेखबर रहने पर मार पड़ेगी, बेखबर, बेफिक्र होने पर मार पड़ेगी। यह अँगारों में हाथ क्यों नहीं डालते?

प्रश्नकर्ता : तब फिर वहाँ पर औपचारिक एक्शन कौन-सा लेना चाहिए?

दादाश्री : और क्या 'एक्शन' लोगे? वहाँ पछतावा और प्रतिक्रमण ही 'एक्शन' हैं।

अक्रम में फिसलने के तीन स्थानक

प्रश्नकर्ता : ज्ञान प्राप्ति के बाद संसार में फिसलने के कौन-से स्थानक हैं?

दादाश्री : ज्ञान प्राप्ति के बाद संसार में फिसलने की तीन ही वस्तुएँ हैं। और सब कुछ खाना-पीना, कपड़े पहनना, चश्मा पहनना, सिनेमा देखने जाना, चाहो सो खाना मगर एक, मांसाहार मत करना। दूसरा, ब्रांडी की बूंद तक नहीं छू सकते और तीसरे, पर-स्त्री (या पर-पुरूष) नहीं। पर-स्त्री का विचार आने पर प्रतिक्रमण करना। ये तीन ही चीजें गिरने के स्थानक है, और कोई चीज़ गिरानेवाली नहीं है। गिरे कि फिर ठिकाना नहीं कहीं। इसलिये हम कहते हैं कि हमारे साथ मत आना और आये तो गिरने के बाद हड्डी भी हाथ में नहीं आनेवाली ऐसा है। यह तो बहुत ऊँचे स्थान, हाईलेवल पर ले जाते हैं। उसके बजाय थोड़े ऊपर गये हों और गिर जायें तो थोड़ी हड्डियाँ तो हाथ लगें! और कोई गिरने के भयस्थानक नहीं है। और तो धंधा-रोजगार करो, सब करो, चाय पीयो, उसमें हर्ज नहीं है। चाय वह इन्टोक्सिकेशन है, पर फिर भी पीने में हर्ज नहीं है। वह कैफ नहीं चढ़ाती। यह शराब पीने पर आत्मा बेभान हो जायें मतलब खतम हो गया। फिर ज्ञान सारा खलास हो गया। फिर उसकी नर्कगति होती है और पर-स्त्री में भी ऐसा ही है। पर-स्त्री संबंध में निपटारा नहीं होता। यह शराब संबंध में भी निपटारा नहीं होता। मांसाहार संबंध में भी निपटारा नहीं होता। लिखकर रखना। गिरानेवाले स्थानक पसंद नहीं हैं न? कि पसंद हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं, पसंद नहीं है ।

'मैं जानता हूँ', आत्मघाती कारण

प्रश्नकर्ता : इस मोक्ष मार्ग में सबसे बड़ा बाधक कारण 'मैं जानता हूँ, मैं समझता हूँ' इसे कह सकते हैं क्या?

दादाश्री : हाँ, वह आत्मघाती कारण है।

प्रश्नकर्ता : उसके बारे में थोड़ा अधिक स्पष्टीकरण कीजिये। वह छूट जाये तो कैसे लक्षण होते हैं? वह दोष प्रवर्तमान रहा तो कैसे लक्षण होते हैं? उसके सामने जागृति कैसे रह सकती है?

दादाश्री : ये छोटे बच्चे बड़ी उम्रवाले लोगों से भड़कते हैं, क्योंकि उनकी अक्ल की धाक बच्चे पर बनी रहती है, इसलिये बच्चा फिर भड़कता है। मतलब फिर क्या करना चाहिए? बच्चे जैसा हो जाना पड़ता है। उनके समान ही नादान बालक! 'डीलिंग' (व्यवहार) ही बालकों जैसा करना पड़ता है, तभी वे सामनेवाले बच्चे खेलेंगे हमारे साथ। मेरे साथ सभी, इतना डेढ़ साल का बच्चा भी खेलें, जैसे बराबर के ही हों ऐसे खेलें। ऐसा कोई परिणाम तो आना ही चाहिए न? इस पर विचार करना तो एक दिन समझ में आयेगा। जाना मतलब मिलेगा। और निष्पक्षपात रूख़ होना चाहिए। फिर भी यदि भीतरी अजागृति के कारण नहीं भी मिला तो फिर कभी मिलेगा।

मोक्ष मार्ग के भयस्थान

मोक्ष मार्ग में बाधक आया कि छोड़ देना और पलट जाना। वह ध्येय के मार्ग पर कहलाता है और अपना ध्येय चूके नहीं। कैसे भी कठिन प्रसंगो में भी खुद का ध्येय चूके नहीं, ऐसा होना चाहिए।

आपको ध्येय अनुसार कभी चलता है कि नहीं? उल्टा कुछ भी नहीं? वह तो सहज हो गया है, नहीं?

प्रश्नकर्ता : मतलब अंदर 'हैन्डल' लगाते रहना पड़ता है।

दादाश्री : लगाते रहना पड़े? पर वे अंदरवाले मान जाये सही? तुरंत ही?

प्रश्नकर्ता : तुरंत ही।

दादाश्री : तुरंत, देर ही नहीं? वह अच्छा। जितना माने उतनी अलग होने की निशानी। उतने हम उनसे अलग ही हैं वह उसकी निशानी। खुद को घूसखोरी कोई है नहीं। घूसखोरी हो तो वह बात नहीं मानता। उसके पास से 'खुद' घूस खाता हो तो फिर वह हमारी बात नहीं मानेगा। उसके पास से 'खुद' आस्वाद ले आयें, फिर 'वे' नहीं मानेंगे।

यह व्यवहार तो उस (संसार की) ओर ही ले जाता है न? अनादि से एक आराधन किया हुआ मार्ग वही हैं। व्यवहार तो सदैव उस और का आदी ही होता है। इसलिये वह उस ओर जाये तब भी हम अपने ध्येय अनुसार हाँकते रहे। बैल तो पुराना रास्ता देखने पर उसी रास्ते पर चलता रहे। अब हमें अपने रास्ते पर ध्येय अनुसार जाना है। इस रास्ते नहीं, यह दूसरे रास्ते पर जाना है। 'इस ओर चल' कहना।

मतलब खुद घूस नहीं लेता तो 'वे' कहे अनुसार तुरंत ही पलट जाये। पर खुद घूस लेने पर फिर मार खिलावे, प्रत्येक बात में मार खिलावे। मतलब ध्येय से परे नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : वह घूस कैसी होती है?

दादाश्री : वह चख आये। और चखते समय फिर मीठा लगने पर वहाँ पर बैठ जाये। टेस्ट कर के आया, इसलिये फिर दूसरी बार थोड़ी-सी एकाद-दो बोतल पी आये।

यह सभी चोर नियत कहलाये। ध्येय पर अग्रसर होना है और चोर नियत, वे दोनों साथ-साथ कैसे रह सकते है? नियत चौकस रखनी चाहिए, बिना किसी घूस-रिश्वत के। यह तो वह मस्ती चखने की आदत होती है, इसलिये यों जरा वहाँ पर बैठकर मस्ती में, आनंद में रहें।

प्रश्नकर्ता : मतलब प्रकृति की मस्ती?

दादाश्री : तब और कौन-सी? वह उसी का ही आदी है ना? तो 'हम' कहें कि 'नहीं, हमें तो अब इस ओर जाना है। हमें मस्ती नहीं चाहिए। हमें हमारे ध्येय अनुसार चलना है।' यह प्रकृति की मस्ती तो भूल-भूलैया में ले जाये।

ध्येय छुडवाये वे हमारे दुश्मन। हमारे ध्येय को नुकसान पहुँचायें यह कैसे पुसायें? वर्ना ब्रह्मचर्य का पालन करना हो और अब्रह्मचर्य के विचार करे, उसके समान हो जाता है। विचार में मिठास तो आयेगी, पर क्या करें? वह भयंकर गुनाह है ना? फिर खुद के ध्येय को टी.बी. ही होगा ना? सड़न ही लग जाये ना?

यहाँ तो खुद का मन इतना मजबूत कर लेना है कि इस जनम में चाहे कुछ भी हो जाये, भले ही देह चली जाये, पर इस भव में कुछ काम निकाल लूँ, ऐसा तय होना चाहिए। परिणाम स्वरूप अपने आप ही काम हो ही जायेगा। हमें अपना तय कर लेना चाहिए। हमारा ढीलापन नहीं होना चाहिए। ऐसा प्राप्त होने के बाद ढीलापन नहीं रखना। फिर जो हो वह सही। उसके झमेले में मत पड़ना और मानों नहीं हुआ तो उसके झमेले में भी मत पड़ना। वह तो सब कुछ आ मिलेगा।

दादावाणी

खुद के पास अधिकार क्या है? भाव, कि इतना मुझे करना ही है। निश्चय, वह खुद का अधिकार इस्तेमाल करना। और दूसरा बाहरी रोग घुसे नहीं कि, चलो, मैं पाँच लोगों को सत्संग सुनाऊँ या ऐसा-वैसा। इसकी सावधानी बरतना। वर्ना ऐसे भी नई तरह के रोग घुस जाये और दूसरे रास्ते पर चढ़ जाये, तो फिर क्या से क्या हो जाये? कोई बचानेवाला मिले नहीं। इसलिये हम मोक्ष में जाना चाहें तो यह 'बात करने में' मत पड़ना। कोई कुछ पूछे तो कहना कि 'मैं नहीं जानता'।

यह तो हम भयस्थान सारे दिखा दे। यदि भयस्थान नहीं दिखायें तो उल्टा हो जाये। ये सभी पुण्यवंत हैं न, बात भी प्रकट हुई न! वर्ना इस बात की कैसे खबर होती? और मैं भी इसमें कहाँ गहराई में उतरने जाऊँ? यह तो बात निकली तब निकल गई, वर्ना किसे मालूम था कि ऐसा सब चलता होगा!

यह अपूर्व विज्ञान है! पहले पढ़ा नहीं हो, जाना नहीं हो, ऐसा यह अपूर्व विज्ञान है! इसलिये घंटे भर में सारा पज़ल सॉल्व कर देता है। फिर कभी पज़ल खड़ा ही नहीं हो, ऐसी दवाई घंटे भर में कर देता है, फिर भय नहीं लगता और संसार चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : हकीकत में डिप्रेशन के समय भी खुद जानता ही होता है?

दादाश्री : वही आत्मा। ऐसा है न, डिप्रेशन आने पर हमें एलिवेशन करने की जरूरत है। और क्या करना? इसके बजाय यह तो ठंडागार हो जाये। रोज-रोज एलिवेशन करना ज़रूरी नहीं है। डिप्रेशन आने पर ही करना ज़रूरी कि, 'मैं अनंत शक्तिवाला हूँ, मैं अनंत सुख का धाम हूँ,' ऐसे एलिवेट करना चाहिए।

डिप्रेशन नहीं हो वह जगह हमारी। जहाँ आनंद जाता नहीं हो वह जगह हमारी। जहाँ जगत का कल्याण हो वह जगह हमारी। ऐसा कहेगा न, तो सपाटे से सीढ़ियाँ चढ़ जायेगा।

जय सच्चिदानंद

पूज्य दीपकभाई देसाई के सान्निध्य में सत्संग कार्यक्रम

त्रिमंदिर अडालज

२ दिसम्बर, शाम ४-३० से ६-३० - सत्संग और ३ दिसम्बर (रवि), दोपहर ३-३० से ७ - **ज्ञानविधि**
स्थल : त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी, अहमदाबाद-कलोल हाइ वे, अडालज, जि. गांधीनगर. फोन : २३९७४१००

कोलकता

७-८-१० दिसम्बर, शाम ६ से ८-३० सत्संग और ९ दिसम्बर (शनि), शाम ५-३० से ८-३०-**ज्ञानविधि**
स्थल : विद्यामंदिर, १, मोइरा स्ट्रीट, मींठो पार्क के पास, कोलकता. फोन : ९३३०१ ३३८८५

सम्मेत शिखरजी (झारखंड राज्य)

१५ दिसम्बर, (शुक्र), दोपहर ३ से ७ - **ज्ञानविधि**
स्थल : कच्छी जैन भवन, मधुबन (रेल्वे स्टेशन - पारसनाथ), जि. गीरडीह, झारखंड.

अब सत्संग देखिये दूरदर्शन डीटीएच डीश के द्वारा

पूज्य नीरूमाँ तथा पूज्य दीपकभाई के सत्संग कार्यक्रम दूरदर्शन के नेशनल तथा प्रादेशिक चैनलों पर प्रसारित हो रहे है किन्तु प्रादेशिक प्रसारण की पोलीसी की वजह से कई राज्यों के लोग सत्संग कार्यक्रम नहीं देख पाते। हमारा आप से सुझाव है कि दूरदर्शन से प्रसारित हो रहे कार्यक्रम हमेशा देखने के लिये **डीटीएच डीश** नजदीकी दूरदर्शन केन्द्र में जाकर खरीद लें। डीश की किमत सिर्फ रू. २००० है, बाद में कोई मासिक खर्च नहीं है। इस डीश के द्वारा आप दूरदर्शन की नेशनल तथा गुजराती चैनल के सारे सत्संग कार्यक्रम कहीं भी अपने घर बैठे देख सकते हैं।

दादावाणी

त्रिमंदिर अडालज में...

श्री सांइबाबा तथा भावि तीर्थंकर श्री पद्मनाभ प्रभु का

भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव

(पूज्य दीपकभाई देसाई के सान्निध्य में)

दिनांक २९ दिसम्बर, २००६

दि. २९ दिसम्बर २००६ – प्राणप्रतिष्ठा (बड़े सबेरे)

दि. २९ दिसम्बर २००६ – विशेष भक्ति – रात्रि ८ से १० बजे तक

दि. ३० दिसम्बर २००६ – ज्ञानविधि – समयः सायं ३-३० से ७

स्थल : त्रिमंदिर, अहमदाबाद-कलोल हाइ वे, अडालज, जि. गांधीनगर. **संपर्क :** (०७९) २३९७४१००

कार्यक्रम में भाग लेनेवाले व्यक्तिओं के लिए विशेष सूचनाएँ :

१) यदि आप इस अवसर पर उपस्थित रहना चाहें तो कृपया इसकी अग्रिम सूचना पत्र द्वारा उपरोक्त पते पर भेजना न भूलें। आप दि. २८ दिसम्बर शाम तक पहुँच जाये, ताकि २९ दिसम्बर को सुबह कार्यक्रम में भाग ले सकें।

२) स्त्रियों एवं पुरुषों के रहने की व्यवस्था अलग-अलग होने से सामान अलग से लाएँ।

३) ओढ़ने एवं बीछाने का चद्दर, एयर पीलो तथा सर्दी का मौसम होने के कारण गरम कपड़े भी साथ लाएँ।

४) किसी भी प्रकार की कीमती चीजें साथ में न लाएँ।

पूज्य नीरूमाँ के टी.वी. कार्यक्रम

भारत ▯ ▯ **'दूरदर्शन' (नेशनल) सुबह 8-30 से 9 'नई दृष्टि, नई राह' (सोम से शुक्र)**
तमिलनाडु में उसी समय देखिए, तमिल भाषा में...
▯ ▯ **'दूरदर्शन' डीडी-१ हररोज दोपहर 3-30 से 4 (गुजराती में)(सिर्फ गुजरात में)**
▯ ▯ **'Zee आल्फा गुजराती' सुबह 7 से 8 'वात्सल्यधारा' (गुजराती में)**
▯ ▯ **'आस्था इन्टरनेशनल' हररोज दोपहर 12 से 12-30 (गुजराती में)**

▯ ▯ **सोनी टीवी पर सुबह 7 से 7-30, (हिन्दी) (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में (भारत के अलावा)**

▯ ▯ **'आस्था इन्टरनेशनल' पर सुबह ७-३० से ८, (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में (भारत के अलावा)**

U.K. : ▯ ▯Zee Gujarati (Channel 839), Everyday 6-30 AM to 7-30 AM (In Gujarati)

U.S.A. : ▯ ▯'TV Asia' Everyday 7 to 7-30 AM EST (In Gujarati)
▯ ▯Zee Gujarati, Everyday 8 to 9 AM EST (In Gujarati)
▯ ▯'TV 39 (NJ)' Mon-Fri 6 to 7 PM & Sat 6 PM to 6-30 PM (In Gujarati)

Canada: ▯ ▯'ATN' Every Wed-Thu 8.30 to 9.00 AM EST

पूज्य दीपकभाई को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

डीडी-११ पर हररोज रात्रि 9 से 9-30 (गुजराती में)

'आस्था इन्टरनेशनल' पर रात्रि १० से १०-३०, (सोम से शुक्र) - समग्र विश्व में

नवेम्बर - २००६
वर्ष -२, अंक -१

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/17258/05
Reg. No. GAMC - 1500
Valid up to 31-12-08
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set - 1
on 15th of each month.

'मुझे ज्ञानी की भेंट हो' यही भावना करें

' खुद कौन है ' इसका भान नहीं है । यह अज्ञान ही रूट कॉझ (मूल कारण) है जगत का। अब इस कॉझ (कारण को) निर्मूल करनेवाले ज्ञानी आम तौर पर किसी काल में नहीं होते हैं। ज्ञानी मतलब दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ, दुर्लभ... सतयुग में भी जो दुर्लभ हैं। इसलिये मन में प्रतिदिन भाव रखना कि 'मुझे ज्ञानी की भेंट हो'। मुझे और कुछ नहीं चाहिए। ज्ञानी सारा ज्ञान देते हैं और ऊपर से मोक्ष की जिम्मेदारी भी लेते हैं।

-दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Basement of Parshwanath Chambers,
Nr. New R.B.I. Income Tax Area, Ahmedabad - 14 and published from Registered Address of the Trust

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27542964, 27540021